दंष्ट्री अवतारा। ब्रह्मपुरी में निजतन धारा ॥ धरि अवतार महासुख कारो। हिरण्याक्ष बधि भूमि उधारो ३ निष्ठा तृतिय महासुख कारी। सतसंगति जामें बिस्तारी ॥ सेवा साधु कही है तामें। कथातीस भक्तन की जामें४ सोई बरणि कहत सुखपाई। संत चरण में शीश नवाई॥ सर्व शास्त्र इमि कहत सचेता। जीव कि बंधन छूटनहेता ५ है सत्संग एक जगमाहीं। दूजी अपर साधनानाहीं ॥ पुनिसत्संग कहावत सोई। भगवद्भक्ति प्राप्त जिहिहोई ६ ताकी महिमा अगमअपारा। किंचिन्मात्रकहत सुखसारा ॥ यहसत्संग लहै पै सोइ। सेवासाधु करै जो कोई ७ तासों सेवासाधु सुहाई। यानिष्ठा तामहिमांगाई॥ सत जो भगवद्भक्त सुहावै। तासु संग सत्संग कहावै ८ पर कोऊ बहुभांति बतावत। तामें मुख्य दोइ ठहरावत॥ एकशास्त्र तीर्थ न सत्संगा। दूसर भगवद्भक्त अभंगा ९ पढ़ै शास्त्र अरुसदाबिचारै। यह अभ्यासहिये बिचधारै॥ चलैतासु अनुकूल सदाई। सारासार बिचार कराई १० ईश्वर माया जीव बिचारै। नाना भांति ज्ञान उरधारै॥ नर्क दुःखसे डरै सदाई। भगवत रूपमाहँ मनलाई ११ रूपमाधुरी मूरतिशोभा। तामेंरहै सदामनलोभा॥ ऐसी बुद्धि लगै दृढ़जाकी। शास्त्रसार जानो मति ताकी १२ हरिचरित्र जिन शास्त्र बिशाला। सोई पढ़ै सुनै सब काला॥ तब यह जीव कृतारथ होई। सुख दुखतजि आनँद लहसोई१३ धर्म बिरुद्ध ग्रन्थ हैं जेते। भूलि न कबहुँ बिलोकै तेते ॥ इहि बिधि शास्त्र संग किय गाना। करत तीर्थ सत्संग बखाना१४ दरश परस मज्जन जो करई। बाढ़ै पुण्य पाप तन जरई। भगवतने यह दियो प्रतापा। तीर्थन को दारन त्रैतापा १५ कोई इहिबिधि कहत सुनाई। भगवद्भक्त नियत वैआई॥नाना भाँति समाज बनावैं। तासों तीरथ नाम कहावैं १६ उनभक्तन में पुण्य महाई। तिन अस्नान कीन तहँ आई ॥ चरण परे भक्तन के जोई। तहँ अस्नान करै नरकोई १७ शुद्ध चित्त

अतिहोइ महाई। बाढ़ै पुण्य पाप मिटिजाई।। तीर्थस्नान रीति सुखदाई। निष्ठा धर्म माहँ कहिगाई १८ प्रथम प्रकारक जो सत्संगा। ताको निर्णय भयो अभंगा॥ द्वितिय प्रकारभेद अब गावौं। महिमा सत्संगति प्रगटावौं १९ कछु सत्संग भेद सुख कारी। ग्रंथ आदि में कहों बिचारी॥ जो सत्संग शास्त्रकहि गावत। भक्तन सों तिहि प्राप्ति बतावत २० निस्संदेह कियो जिनसंगा। पायो वांच्छित अर्थ अभंगा॥ मिलैं न भक्त बिना हरिदाया। मिलैंकरैं तो निर्मल काया २१ हैं अपबर्गस्वर्ग सुख जेते। सत्संगति सम तुलैं न तेते॥ दशमस्कंध भागवत गावत। जगत तरन हित मार्ग बतावत २२ भवबंधन के छूटन हेता। प्राप्त मुक्ति अपबर्ग समेता॥ केवल इक सत्संग बतावत। पुनिएकादश में इमिगावत २३ भगवत बचन कहे इहि भाती। योगआदि अस मम न सुहाती॥ जस सत्संग मोहिं प्रिय अहई। पद्मपुराणहु इहिविधि कहई २४ पुनि अस्कंध पुराण सुनावै। विष्णु पुराण यही विधिगावै॥ अबसन्देह प्रगट यह होई। तीर्थ आदि बहुसाधन जोई २५ सब सों बड़ सत्संग बखाना। याको कारण कौन निदाना॥ सो भगवत अरुशिवकी बानी। है इहि भांति महासुख खानी २६ की जहँ भगवद्भक्त बिराजत। भगवत आपुआइ तहँ राजत॥ तासों भक्त संग हुवजेही। निस्सन्देह मिलैं हरितेही २७ नारद अपर प्रचेताकेरी। कथा भागवत में सुख ढेरी॥ ताको समुझि लेइ विधि नीके। तौ आवै यह अंतरजीके २८ पुनियाको है दूसर भेदा। सोऊकहतहरणसबखेदा॥ जे साधन ब्रत तीरथ गाये। जप तप संयम नेमबताये २९ इन सब में अनुक्षण भक्तन मन। लागत नहीं भ्रमत बिषया गन॥ भगवद्भक्त संग अनुरागै। अनुक्षण भगवत में मनलागै ३० ताको कारण कहौं बुझाई। जासों मनकहुँ अनतनजाई॥ होत तहाँ हरि केर चरित्रा। सेवाकीर्त्तन भजन पवित्रा ३१ अन्य बात कछु होत न ताहीं। जात अनत मन

ताते नाहीं ॥ तीर्थ शास्त्र आदिक जे साधन । भगवद्भक्ति हेत अवराधन ३२ साधन बस्तु प्राप्त जहँ होई। साधक तहाँ लखा तन कोई ॥ उद्यत साधन साधक जाहीं। पद्धति तिनहिं मिलत कहुँनाहीं ३३ पद्धति भक्तदोउ कहुँ जाहीं । तहँ सन्देह निवृत्ती नाहीं ॥ अथवा कोई ठग वापथको। लीन्हो छीनि तीरके गथको ३४ दो० ॥ काम क्रोध मद मोह युत मत्सरईर्षा लोभ। पूँजीलूटैं तीरकी करैं निमिष में छोभ ३५ चौ० ॥ बड़ा संग भक्तनको याते । सकल बस्तु प्रापत हैं ताते ॥ पुनि भगवत पद को पहुँचावै । ज्ञान बिराग भक्ति उपजावै ३६ ताते भगवद्भक्ति जु चाहै। अरु संसार जलधि निर्बाहै ॥ सो सत्संग करै मन लाई । प्रगट संग सर्वत्र सदाई ३७ निज कुतर्कसों सूझत नाहीं । धारत निज कुबुद्धि सबै माहीं ॥ निज समान सबही को जानत। तासु सुभाव हिये नहिं आनत ३८ जो अवगुण पर दृष्टि न करई । शुद्ध सुभाव सदा उरधरई ॥ तौ सत्संग प्राप्त सब तीरा। निस्सन्देह लहै नर धीरा ३९ चित्रकूट वृन्दाबन ठामा । अवध प्रयाग काशि सुख धामा ॥ पुरीजगपति अति सुख खानी। कांचीं अरु उज्जैन बखानी ४० हरिद्वार पुष्कर सुख दायक। ए थलहैं संगति के लायक ॥ पर सत्संग अर्थ यह नाहीं। दर्शन करि मन्दिर निज जाहीं ४१ भक्तन को भगवत बपु जानै। पुनि बिश्वास बचन तिन आनै ॥ बिन बिश्वास कबहुँ नाहिंजोई । नाम तासु सत्संगति होई ४२ है सत्संग प्रयोजन तब तक। हरि चरणन दृढ़ थिति नहिं जब तक ॥ सत्संगति कर अमित प्रभावा। भाषि न पार सहस मुख पावा ४३ दो० ॥ बाल्मीक नारद सेवरि अजामील ध्रुव व्यास। प्रह्लादहु गणिका सहित कुंभसूनु सुखबास ४४ भयेप्रचेता आदि अनेका। सत्संगति प्रताप सविबेका ॥ बिदित पुराण गाथतिन केरी। भक्त अम्बुनिधि हूम घनेरी ४५ पापी बहु सत्संग प्रतापा। तरे न कियो योगव्रत जापा ॥ सो सत्संग अजहुँ नरपावै । परजब

यहिप्रकार बनिआवै ४६ भगवत में निष्ठा जिमिकरई। तिमिभ
गवद्भक्तनमेंधरई ॥ जिमिभगवत सेवामनलागे। तिमिभगवद्भ-
क्तनअनुरागे ४७ भगवत बचन भागवतमाहीं। ममउपघन हैं
भक्तसदाहीं ॥ वेही पूज्य जगत लखिलीजै। तजिउपाय तिन
सेवाकीजै ४८ पद्मपुराणमाहँ हरिगावै। जो ममभक्तअशनकर
वावै। सेवाकरतजौन भक्तनकी। सोसबहोत हमारे तनकी ४९
जबलोंमोहिं न अशनकरावैं। तबलोंभक्त कछूनहिंखावैं ॥ तैसे
हीहौंहूं नाहिंखाऊं। जबलों तिनहिंन अशन कराऊं ५० अपर
पुराणन में हरिगावत। जो मम भक्त भक्त मम पावत ॥ फिरि
भगवत यह बचन उचारा। गंगापाप हरणसुख सारा ५१ च-
न्द्रताप हर सुरतरु दारिद। त्रिदुख अनल नाशन जनबारिद ॥
ममभक्तन के दरशन करई। तीनौ दुख क्षण भीतर जरई ५२
बहुरिऋषिन ये बचन सुनाये। असपवित्र तीर्थादिन गाये॥संत
शीघ्र जसकरत पवित्रा। उभय लोक सुखदानि चरित्रा ५३ इहि
बिधि बचन हजार न भांती। जियालाल नहिं बरणि सिराती॥
जो भगवत आनन्दहि चाहै। चाहै अपर जगत निर्बाहै ५४ तौ
भगवद्भक्तन की सेवा। करै जानि देवनके देवा जाति पाँति कछु
नाहिं बिचारै॥ भगवतसम भक्तहि उरधारै ५५ कोनौ जाति
भक्त हरिहोई। भगवतरूप जानिये सोई ॥ महभारत में भगवत
बानी। जाति भेद मम भक्तअजानी ५६ जो सेवा नहिं करै
सुहाई। ताकी नास्तिक बुद्धि महाई॥ सेवासाधु मार्ग दुखदाई।
बसत पांचठग सबल सदाई ५७ सोरठा। एकजातिको मान
छोटिजाति करसाधुलखि। करै न सेवादान दूजोविद्या गर्वठग
५८ चौ०॥ अपढ़ साधुको छोटाजानै। तृतियगर्व ऐश्वर्य ब-
खानै॥ जाके मदसों मत्तसदाई। भला बुरा नाहिं लखत कदाई
५९ चौथोठग निजरूप विलोकी। साधूको कुरूप अवलोकी॥
सेवामें मननाहिं लगावै। निजस्वरूपके मानभुलावै ६० पंचम
निज शरीर बलदेखी। काहूको नहिंगनत विशेखी॥ इनपांचो

को न्यारेधरई। भगवत चरण प्रीतिदृढ़ करई ६१ जिन वाल्मी
कि सुपच सुखसाजा। नृपति युधिष्ठिर यज्ञसमाजा॥निज रसोइ
में ताहि बिठाई। सेवाद्रुपदी हाथ कराई ६२ पुनि श्रीरघुनन्दन
सुखपाये। भिल्लिनके जूठेफल खाये॥ पुनि केवट निजहृदय
लगाये। लंकविभीषण स्ववश बसाये ६३ हैइकसाधु सेविइति
हासा। सुखदायक सो करत प्रकासा॥ एकसमय साधू इक
आयो। वहकछुरहो देह दुखपायो ६४ सोनिज तियसों कहो
बुझाई। सेवासाधु करौ मनलाई॥ कहोतीय ममशीश पिराई।
तिहि अवसर विधिरचा उपाई ६५ आयो तिहिक्षण तिहिया
माता। उठीतीय अति हर्षित गाता॥ रचेअमित पकवान मि
ठाई। व्यंजन बहुप्रकार सुखदाई ६६ यह लखिसाधु सेविरुटकी
न्हा। घरसों तीय काढ़ि द्रुतदीन्हा॥ बहुरितीय सों बचन सुना
यो। जबयामात मोर चलिआयो ६७ तबतेरो अति शीश
पिरानो। निज यामातदेखि सब जानो॥ सत्यंकि कामी मिथ्या
वादी। स्त्री लोभी अरु बाद कुवादी ६८ दो०। होत द्रव्यप्रिय
जौन विधि सुजनहि भगवद्भक्त। देहगेह परिवार धन पुनि
सेवत अहनक्त ६९ जाकी भगवद्भक्तमें प्रीतिन इहि संसार।
तिहि मनोर्थ दुहु लोकमें सिद्धन होत असार ७० चौ०। भ-
गवद्भक्त प्रीति जो करई। मनवच क्रम सेवा अनुसरई॥ सिद्ध
मनोर्थ तासु सब होई। युगयुग में यश पावै सोई ७१ भगवद्भक्त
विमुख नरजेई। निन्दा करत भक्त कीतेई॥ भगवत घरसों गये
निकाले। चीन्ह हेत मानहुँ मुहँ काले ७२ जो शत्रुता भक्त सों
करई। दुःखदेइ सो आपुन जरई॥ जब हिरण्यकश्यप बलवा
ना। देवन को दीन्हे दुखनाना ७३ भगवत सों सुरजाइ पुका
रे। रोदन करि निज दुःख उचारे॥ पर भगवत उरक्रोध न आ-
यो।जब प्रह्लादहि असुर सतायो ७४ तब पलआध रहानहिं गय
ऊ। असुरहि मारि भक्तसुखदयऊ॥ भगवद्भक्त जासु दुखपावत।
तासुनाशहित भगवत धावत ७५ जो को भगवद्भक्त सतावत।

तीनों लोक मांझ दुखपावत ॥ जिमिदुर्वास गाथजगमाहीं । ग-
ये शरण जिहि राखा नाहीं ७६ अब वरणों सो भक्त सुहाये।
इहि निष्ठामें जिन गुणगाये ॥ प्रथमहिं बिदुरकथा अवगाऊं। सं-
तचरण में शीश नवाऊं ७७ दो०। ग्रामछटेरा योधपुर राजधा-
नि सुखमूल। सेवा संतनकी करत जोदारक सब शूल ७८ एक
साल आवर्षण भयऊ। खेत सुखाय सकल तहँ गयऊ॥ तबहिं
विदुरमनमाहँ विचारा। साधुनको किमि देब अहारा ७९ आ-
ज्ञा स्वप्न दीन भगवाना। काटिक झारो खेत सुखाना॥ सोई
करन लगे हरषाई। हँसी करहिं सब लोग लुगाई ८० सो०।
द्वै सहस्र मनअन्न प्रगटो तासों सुभग अति। भोमन विदुर
प्रसन्न भगवत दीन्हो साधुहित ८१ चौ०। सत्यकि सेवा साधु
सुहाई। उभय लोकमें आनँद दाई॥ सूखेतरु फलफूलगावें।
जन्मजन्म उर भक्ति बसावें ८२ अबभगवानदास की गाथा।
बरणौं नाइ रामपद माथा॥ क्षत्रीवंश जन्म जिनपाये। भीम
सिंहके पुत्र कहाये ८३ परमभक्त भगवतके भयऊ। भक्तनकी
सेवामन दयऊ॥ दृढ़ विश्वास साधुमें कीन्हा। निज मनखैंचि
जगत सों लीन्हा ८४ मथुरामाँझ वर्षप्रति आवैं। साधुन विप्र
न अशन करावैं॥ रासविलास तहां करवावैं। बहुत द्रव्य तिहि
माँझ उठावैं ८५ विधि वशधनसँकोच कछु भयऊ। ऋणलैकै
मथुरामें गयऊ॥ कछु क्रमकरि कियदिन विचारा। विप्रनकीनन
अंगीकारा८६सदा मिलत तेती जबपैहैं। तबहम द्रव्य आपकीलै
हैं॥ सुनि भगवान दास इमि बानी। सबगथ अग्रदियो धरिआ
नी८७तब सबहुँन मिलि कीन विचारा। यामें नहिं है है झगडा-
रा॥ सूखा अन्न देहु बँटवाई। यह कहि एक भवन में आई ८८
अन्न भँगाइक बाँटन लागे। यह लखि भक्त द्रोहि अनुरागे॥ यह
विचार किय भक्त अराती। इनकी हँसी होइ जिहि भांती
८९ दो०। इक सीधे के ठौर पर दश सीधा दैदेत। कृपा करी
रघुनाथ तहँ भक्त लाजके हेत ९० चौ०। द्रव्य लुटाइ अमितति

नदयऊ। परसीतो मन्दिर नहिं भयऊ॥ भक्त लाज राखी रघुरा
या। जिमि द्रौपदि कर बसन बढ़ाया ६१ दो०। भक्तन मन नि
श्चय भई भक्ति प्रभावहि देखि। दारिद वन दावा भगति कामद
सुरतरु लेखि ६२ चौ०। वारमुखी की कथा सुहाई। बर्णन करौं
भक्त सुखदाई॥ नगर बलाद याम्य दिगमाहीं। बारमुखी इक
बसत तहाँहीं ६३ अति धनवान रूप मम मोहै। ताद्वरे इक भूरु
ह सोहै॥ तातर बिमल बेदिका राजै। घनोछाँह पादप सुख
साजै ९४ इकवै साधु लोग तहँआये। टिके सुथल लखि आ
नँद पाये॥ संध्या बारबधू गै द्वारे। बैठे साधू तहाँ निहारे ९५
तब निज मन में कीन बिचारा। साधू जो जानै मम द्वारा॥ तौ
तुरन्त इतसों उठिजाई। यह गुनिमन्दिररही छिपाई ९६ थाली
भरिमुहरैं निशिलीन्हीं। साधुन जाइ दंडवति कीन्हीं॥ जाति
भेद साधुन जबजाने। तब ताहित उपदेश बखाने ९७ एकमुकु
ट तैंले बनवाई। रंगनाथ को भेंटसि जाई॥ शुद्ध होइ तेरोधन
तबहीं। सो या बिधि सुनिपायो जबहीं ९८ मुकुट जड़ाउ एकबन
वायो। तीनि लाख मुद्रालगवायो॥ अति बिश्वास प्रीतिमन
लाई। नाचत चली बाद्य बजवाई ९९ लिये मुकुट पहुँची इमि
तहँवाँ। रंगनाथ को मन्दिर जहँवाँ॥ मन्दिर के समीप जब
आई। रजस्वला भो प्रगट जनाई १०० ब्याकुल धरणि गिरी
सह शोका। रंग नाथ तब ताहि बिलोका॥ ताके हिये प्रेम पहिं
चानी। कही पुजारिन सौं इमि बानी १०१ बारमुखी को लाव
हु जाई। सुनतहि गे सामुहे लवाई॥ मुकुट धरन शिरहाथ उ
ठायो। सिंहासन ऊंचो नहिं पायो १०२ तब भगवत निज शीश
झुकायो। बड़ भागिनी मुकुट पहिरायो॥ बड़ भागिन की ग
णना नाहीं। भई प्रगट धरि हरि उर माहीं १०३ भो भक्तन को
च्रण सत संगा। भयो मनोरथ सिद्ध अभंगा॥ जियालाल स-
तसंगति करिये। ममता छोरि पिटारे धरिये १०४ अब तिलोक
जी की शुभ गाथा। बरणौं नाइ राम पद माथा॥ स्वर्णकारा

के गृह अवतारा। लीन्हीं पूरब देश मँझारा १०५ दो०। हरि भक्तन सेवा विषे बढ़ी प्रीतिअति जाहि। लाभ होत उद्यम विषे खरचत सेवा माहि १०६ चौ०। तौन देश को राजा जोई। कन्या के बिवाह हितसोई। गहन बनावन हेतु भुवारा। दियो तिलोकहि द्रव्य अपारा १०७ इनसाधू सेवा में सोई। व्ययकरि दियो सकल गथजोई॥ मांगोनृपति गाहनो जबहीं। आजु कालिह करिटारो तबहीं १०८ तबराजा निज निकट बुलायो। भोरहिंदेन भाषिघरआयो॥ भयो नृपति करडर अतिताहीं। भोर हि जाइ छिपो बनमाहीं १०९ यह प्रसंग जानोजग तारण। सदाभक्त के रक्षाकारण॥ तुरित तिलोक रूपधरि लीन्हो। गहनो जाइ नृपतिको दीन्हो ११० तहां इनाम नृपतिसों लयऊ। लैति लोकके मन्दिर गयऊ॥ उत्सव अति तिनके घरकीन्हो। साधुन विप्रन भोजन दीन्हो १११ लैपरसाद तहांतिन लीन्हो। जाइ ति लोकहि बन में दीन्हो॥ भोतिलोक घर उत्सव आजू। हमप्रसा दलाये तुवकाजू ११२ कहोतिलोक कौनहैं सोई। जासमनहिं त्रिलोक में कोई॥ यह कहि भे प्रभु अन्तरध्याना। देखितिलो क चरित सुखमाना ११३ धरिभगवान हियेघरआये। सुमिरण भजन माहँ मनलाये॥ साधुन की सेवा नितकरहीं। सीताराम नाम उच्चरहीं ११४ दो०। इहिविधिकथा तिलोककी जियाला ल कियुगान। कथा तिलोचनदेवकी अबमैं करत बखान ११५ चौ०। वैश्य वर्ण में जन्मे जोई। चेलाज्ञान देव के सोई॥ विष्णु संप्रदा के सुखकारी। भगवद्भक्त भये अतिभारी ११६ सेवासाधु करत अतिसोई। रहेतीय निज आपुन दोई॥ चिन्ताकरत रहत दिन राती। चाकर मिलत एकयहि भांती ११७ साधुन के मन की गति जानी। सेवा विविध करंत सब मानी॥ यह गुनि श्री भगवंत सुखदायक। भक्त जनन के सदा सहायक ११८ टहलू रूप आपु हरि करिकै। टूटी जूती पायँन धरिकै॥ कमरी फटी एकशिर धारे। आवत भये तिलोचन द्वारे ११९

कहो तिलोचन लखि सुख पाई। कत सबरे भवन पितु माई ॥
सो कह मम घर बाप न माई। टहलू इत उत फिरौं सदाई १२०
चारि बरण की पद्धति जानौं। भक्तन की सेवा अति आनौं॥
अन्तर यामी नाम हमारा। सात सेर नित करत अहारा १२१
सुनत तिलोचन आनँद पाये। स्नान कराइ वस्त्र पहिराये॥ तब
अन्तरयामी इमि बोले। तुम सों कहत बचन इक खोले १२२
भोजन हित गिल्ला जबह्वैहैंतादिन हम या थल नहिं रैहैं॥तिय
सों सकल तिलोचन भाखा।अन्तरयामिहि निज घरराखा१२३
दीन सौंपि संतनकीसेवा॥लगे करनसो गुनि मनभेवा॥इमि सेवा
कीन्हीं मन लाई।नाम तिलोचन जग फैलाई १२४इहि प्रकार
भे तेरह मासा।मास चतुर्दश कियो प्रकासा॥तीय तिलोचनकी
इकदीना।गई परोसिन घरतन छीना१२५कहो परोसिनि सहित
सनेहा।केहि कारण दुर्बल तव देहा॥सो कह सुनहु परोसिनि बा
ता।पीसत पोवत सबदिन जाता१२६टहलू इक राखो मम स्वामी।
खात बहुत सो अंतरयामी ॥ जब इहि विधि सों तीय बखाना।
भे भगवंत हुत अन्तर ध्याना. १२७ अन्तरयामिहि जब नहिं
देखा। भयो तिलोचन शोक अशेखा॥ बिन जल अन्न रहे दिन
तीनी। भै अकाश बाणी सुख भीनी १२८ सुनहु तिलोचन
बचन सुहाये। तुव अभिलाष जानि हम आये॥ हमहिं टहलुवा
रूप बनाये। संतनकी सेवा मन लाये १२९इच्छा बहुरि तुम्हारी
होई। अंगीकार करैं हम सोई॥ सुनत तिलोचन अति दुखपाये।
पश्चात्ताप महा मन लाये १३० तब संतन बहुविधि समुझायो।
भोजन पान तिनहिं करवायो॥ सेवा भजन करन सो लागे।
भगवत चरणनमें अनुरागे १३१ इहि विधि कथा तिलोचन
केरी। वरणन कीन महामुद ढेरी॥अब जस्सू स्वामीकी गाथा।
वरणौं नाइ राम पद माथा-१३२ दो०। गंग यमुनके बीचघर
भगवद्भक्त सुजान । लाभ होत खेतीम जो भक्त अशन हित
आन १३३ चौ०। एक समय या विधिते भयऊ। तिनके वृषभ

चोर लैगयऊ ॥ तब करुणानिधि रचो उपाई । जिमि ब्रह्माको मोह भुलाई १३४ हरि अवतार जबहिं ब्रज लीन्हा । ग्वालबाल सँग भोजन कीन्हा ॥ सो लखि ब्रह्मा मोह भुलाये । येकैसे ब्रज में हरि आये १३५ जो अवतार सुनो जगमाहीं । सो न लखाइ परत हम काहीं ॥ यह कहि बालवत्स हरि लीन्हों । तुरित पयान लोक निज कीन्हों १३६ यह चरित्र जानो यदुराई । लीन्ह तुरित ते सकल बनाई ॥ ब्रह्मा पुनि देखो इत आई । बालवत्स सब परे लखाई १३७ पुनि देखन निज लोक सिधायो । तहँ विलोकि बहुरो इतआयो ॥ इहि विधि किय आवर्ति घनेरी । पुनि अस्तुति कीन्ही हरि केरी १३८ जस्सूके तिमि वृषभ बनाये । चोर देखि देखन घरधाये ॥ घर लखि बहुरि आइ इत देखा । तिन मन भो आश्चर्य्य विशेखा १३९ तब जस्सू स्वामी सों बोले । भेद सुनाइ कपटउर खोले ॥ हरि चरित्र ये स्वामीभाषा । करौंकार्य तुम निज अभिलाषा १४० हम अपनो कारजहैं करते । तुम सन्देह मांझ किमिपरते ॥ सुनि चोरन मन भो विश्वासा । वृषभ लयाये जस्सू पासा १४१ गुप्तभये मायाके बैला । चोर काम तजिभे तिन चेला ॥ भगवद्भजन करन सो लागे । भगवत चरणनमें अनुरागे १४२ दो० । जस्सू स्वामी की कथा इहि विधिकही बनाइ । रामदासकी गाथशुभ सो ऊकहब सुनाइ १४३ चौ० । परम भागवत ब्रजके बासी । सेवासाधु किभये प्रकासी ॥ देखि भक्त सुख लहैं अतूलै । रबिहि बिलोकि कमल जिमिफूलै १४४ इकवैएक साधुसुखपायो । सुनिबड़ाइ तिनकी तहँ आयो ॥ पूँछाराम दास कहँअहहीं । रामदास सुनिकै उठितबहीं १४५ चरण धोइ चरणोदक लीन्हो । नानाभांति विनय पुनि कीन्हो ॥ भोजन आपुकरैं इतजबतक । रामदासहू आवत तबतक १४६ मिलैं प्रथम यह साधु बखानी । सविनय रामदास कहबानी ॥ रामदासहै एही दासा । सुनि साधू मन भयो हुलासा १४७ रामदास लड़की को व्याहा । ताहित होतभयो उत्साहा ॥ बने अमित पकवान

मिठाई। तिहि अवसर जमाति इकआई १४८ तालातोरि तुरि
त तिन डारा। साधुजनन को दीनअहारा॥ साधुन में इहिबिधि
जिन प्रीती। सुमिरण भजन सकल बयबीती १४९ सन्तभक्त
की कथा सुहाई। बरणौं रामचरण शिरनाई॥ रहो योधपुर बास
स्थाना। भगवद्भक्त भये सुखदाना १५० भीखमांगि ग्रामनसों
लावें। सो साधुन को अशन करावें॥ भो बिख्यात नामतिन
केरा। आये तहांसाधु इकबेरा १५१ तिनकी तीयरही घरमाहीं।
साधुन कहो सन्तकहँ आहीं॥ गेचूल्हे में तीय बखानो। सुनत
साधुजन कीन पयानो १५२ सन्तभक्त मारगमिलि गयऊ। ति
नसों साधुन पूछन लयऊ॥ कहँ सों आवत करिय बखाना।
तब इनतीय वचन सबजाना १५३ दो०। सेवासाधुप्रतापसे
बिमल हृदय तिन केर। काकुकहे गुनियरणिके कहे वचन करिफेर
१५४चौ०। चूल्हेगये रहे गुणखानी। सुनतसाधुजन चकृतबानी॥
साधुनको चकृत जब देखा। संतभक्त इमि कहो बिशेखा १५५
जबहिं प्रभात होत लखिपावों। साधु अशन हित चिन्ता लावों॥
की कब तिनहिं खदन करवैहों। तिनकी सीथ प्रसादी पैहों१५६
यह चूल्हेको अर्थ सुहायो। सुनत साधुजन आनँद पायो॥
संतभक्त साधुन घरलाये। प्रीति समेत अदन करवाये १५७
सो०। संतभक्त की गाथ वरणन कीन्ही सुभग यह। नाइ
रामपदमाथ सेनभक्त गाथा कहतँ १५८ सेनभक्त हज्जाम चेला
रामानन्दके। माधोगढ़ शुभधाम भयेभक्त भगवानके१५९ जिमि
गो वत्सहि पाल तैसेही तिन पालना। कीन्हीं श्रीगोपाल साधु
सेवि अति होतभे १६० चौ०। जात एक दिन भूपति पासा।
तेल लगावन सहित हुलासा॥ मारग माहँ साधु मिलि गयऊ।
तिनहिं लिवाइ भुवन निज गयऊ१६१लागिगये तिनकी सेवामें।
राजाको भय रहा न जीमें॥ सेवा नृपति समय जबआयो। सेन
रूप भगवान वनायो १६२ राजाकी सेवा सब कीन्हा। करिप्रसन्न
निज मारग लीन्हा॥ पीछे सेन भक्त पुनि आये। राजाको

बहु विनय सुनाये १६३ मम अपराध क्षमा प्रभु करिये। मेरी चूक हिये नहिं धरिये ॥ सुनि राजा अति अचरज मानों। सेन हिं महा धन्य करिजानों १६४ गिरो सेन के चरणन राजा। तिनको शिष्य भयो सुख साजा ॥ भगवद्भजन करन सो लागो। भक्ति प्रभाव जानि अनुरागो १६५ धन्य सेन जिन बदि मम सेवा। करी आपु देवन के देवा ॥ सेन शिष्य ताते नृपभयऊ। मार्ग चलाइ बंश निज गयऊ १६६ अब तक बंश नृपति को जोई। चेला सेन बंश में होई ॥ इहि बिधि सेन कथा सुख दानी। जियालाल द्विज कहा बखानी १६७ संत चरण में पुनि शिर नावों। सदा ब्रती की कथा सुनावों ॥ बैश्य बरण सो शाहू कारा। भगवद्भक्तभये सुख सारा १६८ बड़ी प्रीति बिश्वासहि धरिकै। सेवा साधु करैं मुद भरिकै ॥ टिका रहत इक साधु सदाई। तिनके सुतसों प्रीति महाई १६९ खेलत साधु संग निशि दीना। इक दिन साधु कुबुधि यह कीना ॥ गयो शिशुहि काननहि लवाई। दीन्हों तापि मारि तिहि जाई १७० सांझ भई बालक नहिं आयो। तब पुकारता मातु मचायो ॥ तहां एक संन्यासी आई। शाहूकारहि गयो लवाई १७१ गाड़ा बालक दीन दिखाई। पुनि साधू कर कर्म बताई ॥ शाहूकार गहो सुनितांही। मारो तुमहीं बालक काहीं १७२ संन्यासी ब्याकुल अति भयऊ। तासों शाह कहन इमि लयऊ ॥ काहू सों यह बात न कहिये। जाहु नगर सों निज भल चहिये १७३ सुनि संन्यासि नगर तजि दीन्हों। अनतै बास जाइ कहुँ कीन्हों ॥ शाहूकार भवन निज आये। साधू को लज्जित लखि पाये १७४ तिहि संकोच मिटावन हेतू। पूंछो तिय सों धर्म निकेतू ॥ बोली युवति धर्म अवगाही। जो कन्या मेरी अनब्याही १७५ ताको ब्याह साधुसंग कीजै। तौया ग्लानि कदा चितदीजै ॥ नाहिं त कोटि भांति नहिं रहिहै। चलो जाइहै चुपनहिं कहिहै १७६ सुनत शाहवह साधु बुलायो। भगवत इच्छाकहि समुझायो ॥

निज मनको बिचार सब खोलो । ग्लानि समेत साधु तब बोलो १७७ मो पर ऐसी दया न कीजै। सहित यातना के बधकीजै ॥ विविध प्रबोध साहतब कीन्हो। कन्याको बिवाह करि दीन्हो १७८ यहयश फैलो सब संसारा । आये साहगुरू तिहि बारा॥ साहदेखि बड़ आदर कीन्हो। भोजन पानशुभा सनदीन्हो १७९ पूंछा गुरुबालक कहँ गयऊ। कछुदिन भये मृत्युबश भयऊ॥ किहि विधिमरासु कहो बुझाई। मृत्यु विवश संसार गुसाईं १८० कारण कहत साहनहिं भयऊ । तब गुरुध्या न मार्ग लखि लयऊ॥ अति विश्वास भक्तिमें देखी। गुरुबालक खुदवाइ विशेखी १८१ दीन्हो हर्षित ताहि जियाई। आनन्दित भे लोग लुगाई ॥ इहि विधि कथा सदाव्रतिकेरी। बरणी सुखद यथा मति मेरी १८२दो० । केवल कूवाँकी कथा अब बरणौं सुखदाइ। संतंचरित्र बिचित्र अति सुनि कलि कलुष नशाइ १८३ कुंभ कार घर जन्मे सोई। परम भक्त भगवत के जोई॥ सेवा साधु विविध बिधि कीन्हा। निज कुल को पवित्र करि दीन्हा १८४ तिन घर साधु एक दिन आये। अन्न न घर कहुँ ऋणहु न पाये॥ एक दुकान दार कछुदीन्हा। खोदन कूप कौल करि लीन्हा १८५ सामग्री तासों लै आये। साधुन को भोजन करवाये॥ खोदन कूप जात जब भयऊ। गज दश बीस खोदि जब गयऊ १८६ निकसो रेत तोपि तिन लीन्हा। मरो जानि लोगन तजि दीन्हा॥ कोऊ गयो मास दिन बीते। राम नाम सुनि परोसप्रीते १८७ जाइ ग्राम सो कीन पुकारा। सुनत लोग धाये तिहि बारा ॥ हाथौ हाथ मृत्तिका टारा । केवल जी को बैठ निहारा १८८ आसन किये बैठ अनुरागे। लोटा धरा भरा जल आगे॥ एक ओर सब लोग निहारे। धरे मास दिन के पनवारे १८९ सकल लोग तिनको घरलाये। आनँद सहित वाद्य बजवाये॥ कूबर भयो दबे तहँ तासों। केवल कूवाँनाम प्रकाशो १९० एक समय साधूजन आये। मूरति एक लिये सुख

छाये ॥ लियेजात अस्थापन हेतू । केवल लखिके रूप निकेतू
१६१ मेरेघर रहते जो नाथा । तौ मैं सब विधि होतसनाथा ॥
प्रातहि साधूलगे उठावन । तहँते उठे न जगसुख छावन १६२
तब तहँई अस्थापन करिके । पूजन लगे महा मुदभरिकै ॥
ग्राम भसेरा में तिनधामा । मूर्त्ति विराजत अजहुँ ललामा
१६३ भक्त प्रीति लखि रहे तहाँई । जान राय तिमि नामकहा
ई ॥ एक समय केवल मनआई । छापहेत द्वारावति जाई १६४
तब भगवत आज्ञा यह दीन्हा । किमि उतजान मनोरथकीन्हा ॥
सिद्ध मनोरथ सब तुमपाये । छाप चिह्न द्रुतदेह लखाये १६५ ऐसे
ऐसे चरित्र अपारा । हैं केवल जीके सुखसारा ॥ रेतिसिंधु गोमती
मझारा । मूँदतखुलतरहत बहु बारा १६६ दो० । वीचि आगमन
एकवै बन्दखुली रहिरेति । तासुस्वसन वहि देशके लोगनको
दुखदेति १६७ गत मालाकेवल सनुरागा । गोमति सिंधु मिलन
तबलागा ॥ यह प्रभाव केवलकोहेरे । भये अपार शिष्य तिनकेरे
१६८चली देशतिहि भक्ति सुहाई । लागेहोन भजन रघुराई॥ इक
दिन साधु भवन तिन आये । तिनहित युवती अशन बनाये१६९
सूखी रोटीधरी बनाई । तिहिवै आवतासु को भाई ॥ खीर बनाव
तासु हित तबहीं । यह चरित्र केवल लख जबहीं २०० लेन बारि
तिहि तबहिं पठायो । साधुनको सब खीर खवायो ॥ आइ तीय तब
नयनतेरेरे । केवल दिय निकारि घरतेरे २०१ जाइ खसम
कीन्हो ततकाला । एक समय बड़ परो अकाला ॥ लागी फिर
न अन्नबिन ब्याकुल । आई केवल केढ़िग आकुल २०२ देखात
ढ़ो तहाँ भण्डारा । केवल जी लखि बचन उचारा ॥ खसमकरन
में जोमनदीन्हा । तौऐसो नहिं काहेकीन्हा२०३कीजैसोहै खसम
हमारा । जासु भिखारी खसमतिहारा॥ यहकहि बहुरिदया उरआ
ई । दीनताहि यह काम बताई २०४ आवत जातसाधु नितजह
वाँ । भारत मारग नितसो तहवाँ ॥ आवत भो जब बहुरि सुका
ला । ताको बिदा कियो ततकाला २०५ दो० । ग्वालभक्तकी

गाथअव बरणौं सहितसनेह। परमभक्त भगवानके साधुसेविश्रुति येह २०६जो अपने उद्यममेंपावत। सोसाधुनको अदनकरावत॥ एकसमय मनमों अनुरागे। साधुनकी सेवामें लागे २०७ चोरलै गये महिषि तहांते। निज घरआइ कहो तबमाते॥ ब्राह्मण एक महिषिलयगयऊ। दामदेनघीसहकहिगयऊ२०८जानोहालसकल यहमाता। पुत्रनेहकछु कही न बाता॥ चोरदीपदानक इकबारा। रजतहँसुलिमहिषी गलडारा २०९ भगवत जो बिप्रनके बिप्रा। दीन्ही दाम तोरि तिहिछिप्रा॥ ग्वालभवन महिषीपहुँचाई। देखिग्वाल बोले हरषाई २१०रीमालखसांचो कसबिप्रा। हँसुली सर्प्पदाम युतछिप्रा॥ दीन्ही महिषिभवन पहुंचाई। देखि मातु अति आनँदपाई २११ दो०। अब बरणौं गोपालकी कथा अनन्द समेत। कृष्णोपासकहोतभे जैपुर राज्य निकेत २१२ चौ०॥ भयेसाधु सेवीअति सोई। तिनकुलभोविरक्तरह कोई॥ आयो लेन परीक्षाजालू। इन सेवाकीन्ही बहुतालू २१३ भोजन को घरगये लिवाई। तब बिरक्तइमि वचन सुनाई॥ हमतिय को मुख देखत नाहीं। कह गोपाल दुरहिं घरमाहीं २१४ भोजन करनलाग सो जबहीं। झांकीतीयझरोखे तबहीं॥ देखि बिरक्त भक्त मुख माहीं। मारो एक तमाचा ताहीं २१५ दो०। तबहिं दूसरी ओर मुख फेरि दियोगोपाल। पावन करिये ऐसिहू मारितमाचकृपाल २१६ सोरठा। वचन बिरक्त उचार ऐसेही पुत्रहि जनमि। होत बंश उद्धार आनँद युतसो जातभो २१७ चौ०॥ बिष्णुदास गोपालहु दासा। तिनकी कथा करौं परकाशा॥ बिष्णुदास कास्मीर निवासी। गोपाल सुबाबुलि के वासी २१८ काशी निकटबाबुलीग्रामा। तहँ ये रहत रहेसुखधामा॥ द्रविणे के दोनोंगुरु भाई। भक्तनकी सेवा मनलाई २१९ भंडारेमें कोइ बुलावैं। सामग्रीसँगभरितहँ जावैं॥की कछु वस्तु कमी जो परिहैं। तौ हम लै भंडारेभरिहैं २२० इनके गुरू सिद्धरहसोई। इकदिन बिनय बन्धु कियदोई॥ आयसु आपके

रि जो पावैं। तौ संतन को इहां बुलावैं २२१ गुरुनिज चहूँओर जलडारे। पुनि शिष्यनसों बचन उचारे ॥ सामग्री तुम सजहु बनाई। ऐहैं संतव दिन हरषाई २२२ जौने दिन ह्वैहै उत्साहा। सुनि दोनो हरषे मनमाहा ॥ सामग्री सब सजी बनाई। आये जगत साधु सुखपाई २२३ तिन सबको आदर करि लीन्हों। भण्डारा आनँदसों दीन्हो ॥ पांच दिवस लगि सुख सों छाये। भांति भांति के अशन कराये २२४ भेंट बस्त्र अरु द्रव्यसुहाई। सबको देत भये हरषाई ॥ पुनि आयसु दीन्हो गुरु धीरा। नाम देव अरुदास कबीरा २२५ आये इहि समाज महँ सोऊ। दरश न करि आवो तुमदोऊ॥ तिनको पता दियो बतलाई। धाये दरश हेतद्वौभाई २२६ नाम देवके चरणन गह्यऊ। है प्रसन्न तिन इहि विधि कह्यऊ ॥ भगवद्भक्तन प्रीति न जहवाँ। कबहूं जात नाहिं हमतहवाँ २२७ जहँ भक्तनमें प्रीति सुहाई। तहँहम जातसदा सुखपाई ॥ भक्तनमाहँ प्रीति अति देखी। ममनन आनँदलहो बिशेखी २२८ दो०। अब तुमकरो कबीरके दरशन दोनो भाइ। सुनतधाइमारग बिषे मिले कबीरहि जाइ २२९ कृपा सहित ओऊमिले बिदाभांगि सुखपाइ। गुरुढिग रहिलागे करन भजन सिया रघुराइ २३० दो० ॥ कहत गणेशहुदेइ की सुन्दर कथा अनूप। रही ओडछेकी युवतिं मधुकरशाहजु भूप २३१ चौ० ॥ भगवद्भक्ति मंह अद्वेता। भावशुद्ध अति राखत श्वेता॥ जो कछु राज्य माहँ सों पावै। साधुन सेवा माहँ लगावै २३२ एक साधुरानीसों बोलो। धनके उत्तमथल को खोलो॥ रानीकह उत्तमधनं सोई। सेवा साधुमलागै जोई२३३ सुनि जानुम साधुअपकारी। भागि गयो छूरीइकमारी॥ कितने दिवसलगे सोरानी। तनुअचैन रजधर्म बखानीं २३४ नृपकीसे जगई नहिं सोई। की यह घावलखै नृपजोई॥ साधुनसों दे आवघटाई। कछु दिन गये नृपति ढिगआई २३५ दो०। पूंछा चिह्न बिलोकिनृप कहो सकल बिरतंत। भाग सराहो सुन

त नृप पायो सुख अत्यंत २३६ चौ०॥ लाखा भक्त केरि शुभ गाथा। करौं नाइ रघुनाथहि माथा॥ लीन्हो जन्म बंश हनुमाना। मारवाड़ मेंबासस्थाना २३७ रामोपासकभे अतिभारी सेवा साधु करत सुखकारी॥ एक समय तहँ परोअकाला। साधु बहुत आये तिहि काला २३८ दूजे थल बैठनो विचारा। भगवत स्वप्नमें बचन उचारा॥ बासकरौ एही अस्थाना। बृथा बिचार द्वितियमनआना २३९ दो०। महिषिएक गोहूंसकटभरि प्रातहि सुख पाइ। लाखा तुमरे भवन में मैंदेहौं पहुंचाइ २४० चौ०॥ गोहूंइककोठीमें भरियो। जितोप्रयोजन नित्यनिकरियौ॥ कोठी कबहूं घटिहिनसोई। आज्यदुग्ध महिषी सोहोई २४१ होत प्रभात मनुज इक आयो। महिषी गोहूं तिनहितलायो॥ लाखाके मनभो अति मोदा। सेवा साधु करत तजि खेदा २४२ गोहूं महिषि मनुजजो लावा। सोऊ बर्णत हालसुहावा॥ सीतापति कियचरित सुहावा। कोउ काहुको बोलसुनावा २४३ की देखैं लाखा ढिग जाई। गोहूं महिषि देहि पहुंचाई॥ सोईदेइगयो सुखपाई। बरणौं आगे कथा सुहाई २४४ दो०। साष्टांग दण्डवतको करते युत आनन्द॥ लाखा दर्शन हितचले जगन्नाथ सुखकन्द २४५ लिये सुमिरिनी भेंटकि हेता। पहुंचे जगपति निकट निकेता॥ जगन्नाथ तब दर्शन दीन्हो। अंगीकार सुमिरिनी कीन्हो २४६ जगपति पाल कि प्रथमपठाये। तापर चढ़ि लाखाजी आये॥ कछु दिन रहें पुरीमें सोई। कन्या एक कुमारी जोई २४७ सेवा साधु करन हित ब्याहा। करन हेत भो तिन मन माहा॥ पर रुपया तिनके ढिगनाहीं। जगन्नाथ बोले तिन पाहीं २४८ रुपयामम भण्डारे लीजै। हरषित होइ ब्याह निज कीजै॥ लाखा अंगीकार न करयऊ। पुरीछोड़ि तुरतहि चलि भयऊ २४९ तब श्री जगन्नाथ सुखपाई। स्वप्नदियो इक राजहि जाई॥ एक सहस मुद्रा सो दीन्हों। हरिआज्ञा गुनिकै तिन लीन्हों २५० घरमें आइ ब्याह निज कीन्हा। बहुरि साधु सेवा

मन दीन्हा ॥ ऐसे तिनके चरित सुहाये। जियालाल संक्षेपहि गाये २५१ दो०। वरणौं रसिक मुरारिकी कथा परम सुख मूल ॥ परम भक्त भगवानके दारुक विष्टप शूल २५२ चौ०॥ सेवा पूजा करत सुहाई। प्रिय प्रीतम रँगरँगे महाई ॥ युगल किशोर माधुरी मूरति। आनँद मगन न टारति सूरति २५३ सदापियत चरणामृतकाहीं॥पीवतबारि कबहुँसोनाहीं॥एकसमय भण्डारा कीन्हो। चरणामृतसंतनको लीन्हो २५४ तामें स्वाद कछू नहिं पायो। कारण पूछो जो लै आयो ॥ सो कह साधु कुष्ठि इक जामें। धोयो पद न घृणाकरि तामें २५५ आज्ञादियो धोय द्रुत लायो। अमित स्वाद तामें तबपायो॥ एक साधु निज सोंटे केरा। पारस मांगत भो तिहि बेरा २५६ भण्डारा सो जब नहिं पायो। तब वह उठत भयो अधखायो ॥ पत्तल निज उठाइ कर धारा। रसिक मुरारि शीशपर मारा २५७ दो०। ताको रूसो जानिकै द्वादश नृप तिहिकाल। चेला रसिक मुरारिके उठे मनावन हाल २५८ चौ० ॥ तिनको वरजि आपुही धाये। साधूको बहु विनय सुनाये ॥ नितप्रति हम चरणोदक पीन्हों। सीथ प्रसाद आजु तुम दीन्हों २५९ इहिविधि साधूको समुझाये। पारस बहुताको दिलवाये॥ एक समय बागीचे माहीं। साधू उतरे गये तहाहीं २६० दो०। एक साधु पीवत रहो हुका धरो छिपाय। रसिक मुरारि विलोकि निज सेवक लीन बुलाइ २६१ होत दरदहै पेटमें हुका लावहु आसु। लायो पी साधुहि दियो। सकुच मिटो उरतासु २६२ एक बेर जागीरके ग्राम रहे दो चार। लीन्हों नृपति निकारिकै दवोराज मद भार २६३ चौ० ॥ श्यामानन्द गुरुसुख पांती। तिनको लिखि पठयो इहि भांती ॥ जिमिहोवौ आवौ तैसेई। उठेंरहे भोजन करि येई २६४ जूँठेगये गुरुके पासा। कीन प्रणाम संमेत हुलासा॥ आज्ञादियो नृपति ढिगजाऊ। चलेपालकी चढ़ि जहँराऊ २६५ रसिक मुरारि सुनो नृप आयो। मस्त गयंद बाट छुड़वायो॥

भागेलोग कहारहु भागे। रसिक मुरारि कहन तब लागे २६६ रेगज गर्जतर्ज अब तजिये। कृष्ण कृष्ण या विधिसों भजिये॥ सुनत गजेंद्र शोर तजि दीन्हों। चरणन माहँ शीशधरि दीन्हों २६७ आंसू प्रेम गिरन तिहलागे। रसिक मुरारि देखि सुख पागे॥ माला ग्रीव दीन पहिनाई। भगवत नाम नेम बतलाई २६८ धरि गोपालदास तिहि नामा। राजा सुनि यह चरितल-लामा॥ तजि दुष्टता शरण तिन आयो। निज अपराध क्षमा करवायो २६९ चेला होत भयो तिनकेरा। दीन्हो ग्राम छोड़ि तिहि बेरा॥ औरौ ग्रामदेत भो भूपा। वह गज करत चरित्र अनूपा २७० बनजारन की जिनिसि लयावे। साधुन सेवा मांझ लगावे॥ भण्डारा सो करत अपारा। अति उत्साह करत सुखसारा २७१ बनजारनकी हानि सुनी जब। समुझायो गुशाइँ हाथिहि तब॥ तब बारण सो देश विहाई। पांच सात सौ साधु लिवाई २७२ रामत करन लगो तिहि काला। बनि महंत संतन सुखपाला॥ उतरैं जहां भेंट तहँपावैं। सामग्री सब लोग लयावैं २७३ यह वृतान्त जगत भो ख्याता। आमिल देश सुनी यह बाता॥ पकरनको तिहि कीन उपाया। पर तिहि हाथ न हाथी आया २७४ कोऊ साधू बेष बनाये। सहजहि करिवरको गहि लायो॥ कारागारम बन्धन कीना। वह गोपाल दास सुख भीना २७५ तजि भगवत प्रसादै को सोई। भोजन करत अपर नहिं कोई॥ तीनि दिवस किय अन्न न पाना॥ तब आमिल इहि भांति बखाना २७६ लैजावो गंगाजी माहीं। गंगा जल पीवैगो ताहीं॥ लै गंगा जीमें जबगयऊ। तजितन-परम धाम पथ लयऊ २७७ दो०। ऐसे रसिक मुरारिके चरित महा सुख दाइ। हाथीकी उपदेश यें नरकी कहा विसाइ २७८ चौ०॥ संत चरण रज मानस लावौं।मन सुखदास कथा अब गावौं॥ कायथ भगवत भक्तसुहाये। भगवतके दरशन जिनपाये २७९ सेवा साधु प्रीति अति जिनके। कंगालता आइ घर तिनके॥

उपवासन सों दिवस वितावत। ऐसी दशा माहँदुख पावत २८०
एक दुष्ट साधुहि बहँकाई। भोजन हित सो माँग मिठाई॥ तिन
निज तिय सों पूँछा जाई। नथ उतारि सो दिय हरषाई २८१
गहने ताहि बणिक घर कीन्हों। आनि मिठाई साधुहि दीन्हों॥
भगवत लखि इमिप्रीति सुहाई। मनसुखदासक रूपबनाई २८२
बणिकहि मुद्रा दै सुख पाये। लै नथ मनसुख के घर आये॥
चौका देत युवति तिहि काला। नथलखि बोली वचन रसाला
२८३ आपुहि देहु मोहिं पहिनाई। सुनि पहिनाव स्वकर रघु-
राई॥ तियकी भक्ति अधिक हरिजानी। ताको दरशदीन सुख
दानी २८४ ऐसी रंक दशा में जोई। गहन एक केवल नथ
सोई॥ पहिनि सुहागिनि जासु कहाई। सो उतारि दीन्हों सुख
पाई २८५ साधूसेवा कीनसुहाई। दरशन कस न देहिं रघुराई॥
मनसुखदास सुनो सबहाला। जानेरघुपति चरित बिशाला २८६
भये महा आनँद रसपागे। अपने भागक शोचन लागे॥
तियको भागधन्य करि माना॥ अन्न बारितजि दीन निदाना
२८७ दरशन की अभिलाषा करिकै। लागे भजनकरन मुद
भरिकै॥ स्वप्न भयो काशीमें आवो। दरशन तहां हमारे पावो
२८८ काशीमें पहुँचे तिहि काला। दरश चतुर्भुजरूप बिशा-
ला॥ पायोबर मांगो तिन पाहीं। एहीरूपबसै उर माहीं २८९
धारो मानसरूप सुहायो। अन्ते समय सोई बपुपायो॥ मन सु
खदासगाथ सुखखानी। जियालाल संक्षेप बखानी २९० दो०।
अबवरणौं हरिपाल निःकिंचनकी गाथशुभ। ब्राह्मण वंशरसाल
भयेभक्तभगवानके २९१ चौ०॥ सेवासाधु करत मनलाई। सेवा
में सब द्रव्य उठाई॥ जब कछुद्रव्य रही घरनाहीं। तब ऋणलेत
भये जहँ ताहीं २९२ निःकिंचनभे ख्यात अपारा। जबकोऊ नहिं
दीन उधारा॥ चोरीठगी करन तबलागे। सेवा साधुहेतै सुखपा-
गे २९३ कंठीतिलक जासुतन देखै। जानै भगवद्भक्त विशेखैं॥
भगवतसेवी जाहि निहारैं। ताके ऊपर हाथ न डारैं २९४॥

एक जमाति साधुकी आई । तिहि टिकाइ चिन्ता मनलाई ॥
सामग्री भोजन हितकाहीं । निकरे हाथलगो कछुनाहीं २९५
व्याकुल होत भये मनमाहीं । तब चिंताब्यापी हरिकाहीं ॥
रुक्मिणि सहित द्वारिका तेरे । आये निःकिंचन द्विजनेरे २९६
शाहूकार रूप निज कीन्हा । शाहूकारिणि रुक्मिणि लीन्हा ॥
बोलतभे निःकिंचन पाहीं । देहु पठाइ ग्रामवहि ताहीं २९७
मुद्राएक लेउ निज हाथा । चले सुनत निःकिंचन साथा ॥
कछुक पंथआगे चलिगयऊ । तीरुकमान सुधारत भयऊ २९८
यह निज मनमें कीन विचारा । चीकन चांदन मोट अपारा ॥
भगवत विमुख परत दिखराई। तिलक मालनहिं परत लखाई॥
२९९ लेन चाहिये याको माला । मन विचारि बनमें ततकाला॥
लीन्हो रिष्टधारि करमाहीं । भय दिखराइ तुरित तिनपाहीं ३००
सब आभूषण लीनउतारी । छल्लाएक रहोतिहिनारी ॥ निःकिंच
न ताको बलकरिकै । लगे उतारन अति मुद भरिकै ३०१ शाहू
कारिनि बचन सुनाई । रे बेदरद कठोर महाई ॥ लीन्हो सारो
गहन हमारा । छल्ला हितबल किये अपारा ३०२ तोरे अब अं-
गुलियमडारत । निःकिंचन सुनि बचन उचारत ॥ सुनुबावरि
कठोरता कैसी । अरु कोमलता चहतन ऐसी ३०३ सोछल्ले तो
कहँ सुखपाई । दैहै तेरो खसमगदाई ॥ मैंयाछल्ले को परिहरऊं ।
दश भक्तन सेवा किमि करऊं ३०४ यह सुनिप्रभु प्रगटे निज
रूपा । हृदयलगाइ तिनहिंकियभूपा ॥ अन्तरध्यान भयेबनवारी॥
सो मूरति ब्राह्मण उरधारी ३०५ सेवासाधु प्रताप महाई । देखौ
प्रगट प्रभाव लखाई ॥ पापकर्मभे पुण्यस्वरूपा । भगवत दीन्हो
दरश अनूपा ३०६ जो भगवत कालहुके काला । अरुभय केभय
परमकराला ॥ भक्तन बश्य रहत प्रभुसोई । करत मनोरथ पूरण
जोई ३०७ भक्तने हेतधाम तजि आवत । दुःख बिनाशि सुक्ख
उपजावत ॥ जासु समान द्वितिय नहिंकोई । ताकर शीलकस
न असहोई ३०८ श्रीरघुवर पदकमल मनावों । हरी रामकी

कथा सुनावों ॥ भगवत भजन सदाउर आनत। साधन अपर तुच्छ सब जानत ३०९ बुद्धिमान अति चतुर प्रतापी। प्रीतम प्रियाप्रीति अतिव्यापी॥ करत दिवस निशिध्यान सदाई। साधू सेवा अति मनलाई ३१० एक साधुकी धरतीएका। संन्यासी लीन्हो अविवेका॥ रानाढिग बैठत रहसोई। अति मित्रता गर्व सों जोई ३११ साधूराना केढिग गयऊ। सब वृत्तान्त कहतनिज भयऊ॥ रानाधरती नहिं दिलवायो। ताहिपकीर बाहरकरवायो ३१२ तब वह साधुलाज अति पायो। हरी राम समीप चलिआयो॥ सब वृत्तान्त कहो समुझाई। हरीराम रानाढिग जाई ३१३ राना वचन कान नहिं कीन्हे। हरीराम प्रत्युत्तर दीन्हे॥ तैंअति मूढ़ नियाउ न जाना। अतिमदांध ऐश्वर्य्य भुलाना ३१४ हाटक कश्यप कंससुरारी। रावणादि हरिजन दुखकारी॥ धृष्टबुद्धि मंत्री कुन्तल नृप। धृतराष्ट्रहू सचिव सुनागप ३१५ दुर्योधन आदिक बहुतेरे। हरिदासन दिय दुःख घनेरे॥ गये सकल ते बारह बाट्य। तैसेही साजे तूठाटा ३१६ पौंड्रक बेणू आदिघनेरे। मानी भयेमान तिमितेरे॥ तिनकी कथा धारि उरलीजै। हरख र भूमि साधुकी दीजै ३१७ सुनि राजामन बोध जनायो। भूमि दिवाइ चरण शिरनायो॥ हर्षित साधुहि भूमि दिवाये। हरीराम निज आश्रम आये ३१८ दो०। संतडरत नहिं कालयम नृप की कहा बिसाति। जियालाल तिन चरणरज धारसि उरअह राति ३१९ अब इकरानी नृपतिकी कथा अमित सुखमूल। ताको मैं बर्णन करत दारक सकल कुशूल ३२० भयेसाध सेवी सुखपांती। साधुन भीररहत बहुभांती॥ एक महंतभक्तभगवाना॥ सो अतिज्ञानी रहो महाना ३२१ तासों नृपति प्रीति अतिकीन्हो। बर्षप्रयंत जान नहिं दीन्हो॥ प्रात जानको कियो विचारा। राजा व्याकुल भये अपारा ३२२ कहो जाई नृपरानी पाहीं। जात महंत रहत अबनाहीं॥ किय विचार मनरानि अतीवै। गयेमहंत नृपति नाहिं जीवै ३२३ देउँ गरल निज बालक काहीं। जाँइ

महंत कछू दिन नाहीं ॥ इहि विधि करि विचार मनमाहीं।
दीन्हो कालकूट शिशुकाहीं ३२४ राजमहल धुनिरुदन सुं-
नानी। दौरि महंत गये दुखमानी ॥ देखो अर्भक उपधन
श्यामा। जानो विष दीन्हो यह बामा ३२५ पूंछत नृपति
हाल बतलायो। सुनि महंत अतिशय दुखपायो ॥ तिनकर नि-
जमें प्रेम बिचारी। भये मग्नतन दशा बिसारी ३२६ बोलि
लिये सब साधुन काहीं। लागेकरन भजन प्रभु ताहीं ॥ क-
छुकबेरमें बालक जागो। उठि आनन्दित खेलन लागो ३२७
तब महंत सब साधु बुलाई। तिनको बिदाकीन सुख पाई ॥
प्रेमबन्ध रानी नृप देखी। आपुरहतभे ताहँ विशेखी ३२८
सत्यकि जो भगवतके दासा। जिन उरसत्संगति गुणभासा ॥
तिनहिं वियोग भक्त रघुराई। कोटि नर्क दुखसरिस लखाई
३२९ दो०। एकभूपकी कन्यका साधुसेविहरिभक्त। तासुकथा
वर्णन करौं जपतराम अहनक्त ३३० चौ०॥ ऐसे संग ब्याह
भो ताको। जानन कहत भक्तिहरि काको ॥ जाननहैं को भक्तमु-
रारी। सो कन्याआई ससुरारी ३३१ व्याकुलहोत भई अति
तहँवां। संतदरश पावत नहिं जहँवां ॥ चेरी बोलिवच न सम
झायो। आवैं साधु मोहिं बतलायो ३३२ आई साधुन केरि
जमाती। उतरि बाटि कामें सुख पाँती ॥ देखिकै लौंडी तुरित
बतायो। सुनि कन्या मनआनँद पायो ३३३ शावकरहो छोट
तिहिकेरा। बिरसन दीनन्ताहि तिहिबेरा ॥ तुरित पतंग त्यागि
सो दीन्हा। कामुक देखिकृच्छ्र अति कीन्हा ३३४ तब वह क
न्या कहो बुझाई। मैकेमें देखा मैं साँई ॥ साधुनको चरणामृत
पाई। जीवै पोत महासुखदाई ३३५ कहो दयित साधूनहिं
चीन्हा। तब तिहि चेरी सँगकरि दीन्हा ॥ तिनके मिलनरीति
बतलाई। साधुनके ढिग दीनपठाई ३३६. कीनजाय दण्डवति
प्रणामा। साधुनको लायो निजधामा ॥ कन्याहू दरशन तब
कीन्हे। धन्यभाग आपनकरिचीन्हे ३३७ साधुन चरण बारि

सुखडारा । भगवद्भजन ध्यानसंभारा ॥ उठो पृथुकजनु नींद बिहाई । देखत भूप महासुख पाई ३३८ राजाभयो भक्त तिहि बारा । निज देशनमें भक्ति सँचारा ॥ कन्याधन्य महाबड़भागी । अमितलोग कीन्हे अनुरागी ३३९ जे सांचे भगवतके दासा । जन्ममरणके नाशत त्रासा ॥ कोटिन जीव अमरकरि डारी । नन्दन एकजियोकाभारी ३४०दो० । जियालालसत्संग करु छांड़ि मूढ़ताभाइ । मिथ्याजग मनलाइहै अंतनकरिहि सहाइ ३४१ चौपाई ॥ नीवांजीकि कथा इहिबेरा । कहौं क्षत्रि कुलजंनु जिनकेरा ॥ भये भक्त भगवतकेतेई । साधुनकी सेवा मनदेई ३४२ कोऊ भक्त भवन तिन आवैं । चरणधोइ चरणोदक पावैं ॥ बहुरि शुभासन लै बैठावैं । बहुरिप्रेम युत अशन करावैं ३४३ करैं प्रसन्नबोलि मृदुबानी । इहिप्रकारसेवा विधिठानी ॥ इहिबिधि बयक्रम सहित उछाहा । भगवत तिनको कीन निबाहा ३४४ कृष्णदासजीकी अबगाथा । कहौंनाइ रघुनाथहि माथा ॥ गलताजी जयपुर सुखवासा । भेरघुनन्दन स्वामिके दासा ३४५ चरण कमलमें भ्रमर समाना । सुख दुख शत्रु मित्र समजाना ॥ महिलाआनन देखनतेई । अभ्यागत सेवामनदेई ३४६ कियो दधीच ऋषीश्वर जिहिबिधि । एऊकाज करतभे तिहिबिधि ॥ बैठेगुफा मांझ इकबेरा । करत भजन सीतापति केरा ३४७ आयो व्याघ्र द्वारपर देखी । अभ्यागत मनजानि बिशेखी ॥ जानू मांसकाटि तिहि दीन्हा । आस श्वास तासु इमिकीन्हा ३४८ भयेप्रसन्न देखि भगवाना । दर्शन देतभये सुखदाना ॥ अब जगमांझ लोग इहिभांती । मुट्ठी अन्न दियो नहिं जाती ३४९ मांगत क्षुधित द्वारपर आई । तासों कहत मोट अधिकाई ॥ मिहनतमाहँ कठिनता देखा । मांगव भीख सहज करिलेखा ३५० दाना एकदेत नहिं भयऊ । बचन कठोर कहन बहुलयऊ ॥ ऐसेलोगनको यमदूता । ताड़न करहिं बांधि मजबूता ३५१ राजा बाईकथा सुहाई । सोऊ सुनहु संत मन

लाई ॥ राजा रामपुत्र खेमाला। धर्म पत्निबाई सुखशाला३५२
भगवतगुरू भक्तकी सेवा। करतसदा त्यागे छलभेवा ॥ नवधा
भक्ति मुख्यतर जाना। अपरधर्म दिय छोंड़ि निदाना ३५३
भगवत भक्ति प्राप्तको हेतू। भक्तनसों गुनिधर्म निकेतू॥ तिन
सों प्रीति कियो अति भारी। हरिदास्यता सुमानस धारी ३५४
एक समय पति सँग सुख पागी। मथुरा जातभई अनुरागी॥
रहो द्रव्यधन पासम जोई। साधुब्राह्मणनको दिय सोई ३५५
खरच न राखो मारग हेतू। आये नाभाजी सुख सेतू॥ कड़ारहे
हाथनमें ताही। मोल पांचशत मुद्रा जाही ३५६ कीन बिचार
रहे मनमाहीं। इन्हेंबेंचि जैहें घरकाहीं ॥ सो नाभाजी को दै
दयऊ। कहन वचन राजासों लयऊ ३५७ अबतक देह बोझ
यह जोई। आयो आज काममें सोई॥ राजासुनि प्रसन्न अति
भयऊ। कौनिऊ भांति भवन निज गयऊ ३५८ दो०। सत्यकि
चिंताकालिहकी जाके मनमें होइ। जियालाल किहि बिधिकरै
साधूसेवा सोइ ३५९ चौ० ॥ नन्ददास ब्राह्मण हरिदासा।
तिनकीकथा करौं परकासा॥ जासु बरेली बासस्थाना। सेवा
साधु करत विधिनाना ३६० खेतीमांझ अन्न जो पावैं। सोसब
सेवा साधु लगावैं॥ एक दुष्ट हरि बिमुख अपारा। बत्सीमारि
खेत तिन डारा ३६१ हत्या तिनको दीन लगाई। नन्ददास
लखिदीन जियाई ॥ निश्चय भयो भक्तिको भारी। सब बि-
श्वास हिये निजधारी ३६२ दो०। कथाकहौं हरिदासकी परम
भक्तभे राम। योगानन्दसुबंशमें होतभये सुखधाम३६३बढ़ी भक्ति
थोरेहीकाला। जिमिबामन बढ़ि ततकाला॥ कबहुँनकीनसाधुअ
पराधू। गुरु समान माने नित साधू ३६४ तिलक मालसों प्री-
ति विशाला। जनक सदृशं बिराग सब काला ॥ इमिहरिदास
कथा सुखखानी। जियालाल द्विज कहाबखानी ३६५ कान्हर
जीकी उत्तमगाथा। बरणौंनाइ रामपदमाथा॥ बिठ्ठलदास पुत्र
रहजोई। मथुराबासी चौबे सोई ३६६ करतरहे भगवतउत्साहा

चारौ बरणसमेत उछाहा ॥ चारौ आश्रमनृप समुदाई। अरु कंगाल आव सुखपाई ३६७ दो०। सबको अति आदर करत बिमुख जात नाहिं कोइ। भोजन अम्बर बन्दना देत भक्त हरिजोइ ३६८ होत समाज तहां इहिभांती। जनु बरषा अमृत सुख पांती ॥ सबको बहु बिधि करि सत्कारा। बिदा करत कान्हरसुख सारा ३६९ होत मग्न प्रेमाम्बुधि भारी। आपनको बड़ भागि बिचारी ॥ तिहि समाज नाभाजी आई। तिनको पदवी दीनगुसाँई ३७० माधो ग्वाल कथा अवगाई। भक्त साधु सेवी सुखदाई ॥ न वधा भक्ति धरेउरसोई। लक्षण प्रेममानसरजोई ३७१ भये तासु तेराजमराला। सब कि भलाइ चहत सबकाला ॥ अहनिशि ध्यावत रामचरित्रा। क्षमा शील तन धरेपवित्रा ॥ ३७२ निर्मल चित्त प्रेमकी खानी। सबके मित्र सबहि सुखदानी ॥ क्रूर भावकाहू सों नाहीं। शत्रु मित्र जानत समताहीं ३७३ गोपाली कि कथा सुख दाता। गिरिधरग्वाल केरि जो माता ॥ रही यशोदाकी समताई। मनमोहन में प्रीति महाई ३७४ रसमाधुर्य्य प्रेमउरधारा। अहनिशि गोबिन्देति पुकारा ॥ संतचरण में प्रीति महाई। पुनि तिनको पालत सुख पाई ३७५ दो०। श्रीरघुनन्दन चरणरज के प्रसाद को पाइ। बरणी निष्ठा तीसरी भक्तनको सुखदाइ ३७६ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्तानुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचितेचतुर्विंशतिनिष्ठामध्येतृतीयसाधुसेवासत्संगनिष्ठायांत्रिशद्भक्तकथावर्णनभक्ताम्बुनिधौपंचमस्तरंगः ५ ॥

सो० । श्री रघुवरपद नौमि जनकनन्दिनी के सहित। भक्त अम्बुनिधिसौमि गाथा भक्तनकी कहौं १ दो०। श्रवण महातमजासुमें निष्ठाचौथी नाम। अहैचारि भक्तन कथा जामेंअति सुखधाम २ श्री रघुवर पदकमल की कमल रेखउरधार। कपिल देव अवतार को करौं प्रणाम अपार ३ चौ०। जिन जग के उद्धारन हेतू। सांख्य शास्त्रप्रगटो सुखसेतू ॥ भागवतपद प्राप

त सुखसाजा। अथवा निज उद्धारन काजा ४ भगवत चरित
सुनै मनलाये। जबलौं चरितन सुनैं सुहाये ॥ भगवतमें किहि
विधि मनलागै। ध्यान मंत्रजप किहिविधि जागै ५ पूजाव्रत
सब साधन जोई। हैं सम्बन्ध श्रवणसे सोई॥ जैसे गुरुशास्त्रन
सों सुनिकै। ताअनुकूल करतमन गुनिकै ६ जे पर लोकलो
कके काजा। श्रवणहि किये सजत सब साजा ॥ जैसे ब्रह्महि
हरिसुख भीना। सृष्टि रचन को आयसु दीना ७ रचिनहिं
सके भई तपबानी। तिहि अनुकूल कियो सुख दानी ॥ तब
रचना कीन्ही संसारा। यहि विधि श्रवण महात्म्य अपारा ८
शब्द ब्रह्म कोऊ मत भाषत। शब्दहि सुने मुक्ति अभिलाषत॥
ताते श्रवण महात्म्य अपारा। सुनि हरि सुयश तरैभव पारा ९
बिनासुने श्री राम चरित्रा। मिलैं किं भगवत परमपवित्रा ॥
महिमा सत्संगति सुख पांती। शास्त्र पुराण कहत बहुभांती१०
ताको तात्पर्य्य यह भाई। भगवत चरित सुनै मनलाई ॥ प्राप्त
होइ भगवत पद माहीं। सत्यसत्य पुनि सत्यसदाहीं ११ श्री
सुख भगवत आपु बखाना। बहुरिपुराण करत असगाना ॥ है
हरिवंश लिखीयह बाता। भगवत चरित जहां सुख दाता१२हो
त बसत तहँ शास्त्रपुराना। वेद तीर्थ सब कर अस्थाना ॥ करै
मुक्तिकी इच्छा जोई। भगवत चरित श्रवण करुसोई १३ पुनि
भागवत बचन यहिभांती। भगवत कथा अमृतकीपांती ॥ ता
जो सुनै श्रवणमन लाई। जाइ परमपद पापनशाई १४ दूसर
बचन कहत पुनिसोई। भगवत कथा सुनत नहिं जोई ॥ प्रा
कृतनरचरित्रको गाना। सुनैते श्वान कोल अनुमाना १५ बि-
ष्टामेंशूकर रुचिभारी। तैसे वे नर चरित सुखारी ॥ भये जुहैहैं
सुख भ्राता। सुनि हरिचरित न दूसरि बाता १६ दो० । पर जब
अति विश्वासकरि सुनै चरित भगवान। नित्य नवीनहि जानई
तृप्ति न मानअआन १७ सो० । महाराज पृथुभूप हरिचरित्रकेश्र
वणहित। दशसहस्त्र सुखरूप मांगेश्रवण उदारमति १८लिखोजु

श्रवण प्रथम नवधा में। तात्पर्य्य येही है तामें ॥ कीबिन सुनि भगवान चरित्रा। मिलत न भगवतभक्ति पवित्रा १९ एक श्रवण इहिविधिते होई। वार्तालाप परस्पर जोई ॥ दूसर श्रवण छन्द गति जोई। तीसर संतसंग में होई २० श्रवण संतसंगति में जोई। उत्तम सब श्रवणन में सोई ॥ याको कारण कहत बुझाई। श्रवण साधना मिलै तहांई २१ भ्रम सन्देह होइ कछु जोई। तिन समीप नाशै सब सोई ॥ कथा पुराण आदिकी जोऊ। है करावनो उत्तम सोऊ. २२ आपै आप मिलै सतसंगा। भगवत चरित सुनै सउमंगा ॥ परजे लोगमदांधघनेरे। तेनाहिं जात कथा हंस्निरे २३ हैं ऐश्वर्य्य माननर जोई। कथा करावत इहि विधि सोई ॥ जानि अमंगल कछु उत्पाता। अथवा मरत देखि तनुजाता २४ अथवा प्रेत तीयको लागै। कीन्हे बहु उपाय नहिंत्यागै ॥ इहि विधि कारजजगत घनेरे। मानि कहावत नहिं सुखतेरे२५ जब वे कथा नाहिं कहवावत। तब बहुलोग तिनहिं खिसवावत ॥ जबमनमाहँ लाजअतिआवै। तब ऐसेसों कथा कहावै २६ आवत सदा काममें जोई। अथवा अपनपुरोहित होई ॥ जिनसोंदबे रहत दिनराती। कथा कहावत तेइहि भांती २७लागीहोन कथाजबसोई। तहां सुनन आवत नहिं कोई ॥ सावकास नहिं कोउबतावत। कोऊ भीर परिश्रमगावत २८ कोऊ इविधि कहत सुखपाई। हमका पाप कीनहै भाई ॥ जो हरिकथामाहँ मनलावैं। पूरणहोइ तीन दिन आवैं २९ दो०। कोऊ निजको जानि बड़ लघुवर कथा बिचारि। जैबो लघुता मानिकै जात न मद उरधारि ३० चौ०। भगवतकथा सुनन नहिं जाहीं। कारज इविधि करत घरमाहीं ॥ खेलैं गंजीफा सतरंजा। कुत्सितकथा कहैं सुख भंजा ३१ नाचकूद अरु खेल तमासा। देखनमें लावत मनखासा ॥ ऐसे निष्फल कारज त्यागी। करत न कारज भगवतलागी ३२ विधिबश जातभयो जो कोई। जातहि सो निद्रावश होई ॥ कोऊ तिनसों पूछत भयऊ।

पण्डितकथा निन्द करिदयऊ ३३ कथा कहावन वाला जोई। सुनतारहा अकेला सोई ॥ जब समाप्त होने दिन आयो। तब सबकाहँ बुलाइ पठायो ३४ बारजबहिं दश बीस बुलाये। तब पूजाहि चढ़ावन आये ॥ जासो अच्छर कानन परई। देरीहोइ क्रोध अति करई ३५ गयो बुलावन ताहिरिसाई। अबहीं क्यों बुलाइ बैठाई ॥ कोऊ पण्डितजीहि सुनावै। करौ शीघ्रता संध्या आवै ३६ शीश उठाइ कोउ अवलोकत। पांती पत्र समाप्त विलोकत ॥ कौघर मालिक पाहिं पुकारी। आरति आदिकि करौ तयारी ३७ कोई चरण दुःख नहिं कयऊ। मुद्राभेजि तहांपर दयऊ ॥ इहिविधि कथामाहँ मनलावैं। जो कहुँ नृत्य विषे सो जावैं ३८ निद्रा सपनेमांझ बिहाई। इकटक चितवैं दृष्टिलगाई॥चलैन बूतन इहिविधि करई। बारबधू लै अम्बक धरई ३९ तृष्णाक्षुधा भूलि तनजावैं। मनलै ताके प्रेम लगावैं ॥ बैठैंप्रथम सबनसो जाई। अति आनन्द मनहुँ निधि पाई ४० भगवत कथा सुनन जबजावैं। खड़े तोप मुहँ इमि मन लावैं॥वरणि कहे अवगुण ये जोई। हैंमोमे सब अफ्रनकोई ४१ हाथजोरि विनती यह करिये। कोऊ माख न मनमेंधरिये ॥ भगवंत चरित महासुखदाई। ताहि सुने कल्याण महाई ४२ भगवत चरित सदा सुखदाई। कलि विशेष नहिं आंन उपाई ॥ भगवतसुयश सुने बिनभाई। कौन सकै भव फांस छुड़ाई ४३ भगवत चरित सुनैं जिनकाना। हरि पुर चले बजाइ निशानां॥ निष्ठा श्रवण महात्म्य महाना। जियालाल किमि करै बखाना ४४ हे प्रभु सीतानाथ खरारी। प्रणतारति भंजन सुखकारी ॥ दीनबन्धु दीनन दुख दारण। गणिकागृद्ध किरात उधारण ४५ जनप्रह्लाद विभीषण रक्षक। मानस वाक्य कर्मकृत भक्षक ॥ शवरि सुतीक्षण ध्रुव सुखदायक। विश्वामित्र सुकंठ सहायक ४६ धना द्रौपदी लज्जा राखन। गज विपत्ति दारुण हुततावन ॥ जैजैजै कौशल्या नन्दन। जियालाल जन विपति निकन्दन ४७ जै त्रिशिरारी जयति सुरारी।

गोखण्डन गोबर्द्धन धारी ॥ जै सुबाहु नाशन वक हंता। दुष्ट दलन सुखदायक संता ४८ जै जै दशरथ अजिर विहारी। जै गोपीजन आनँद कारी॥ जै कौशल्या सुवन दुलारे। जै बृन्दाबन के रखवारे ४६ जयति जनक प्रण राखनहारे। जै देवकि बसुदेव दुलारे॥ जयति परशुधर गर्वप्रहारी। जै परमेष्ठी मोह बिदारी ५० युगलस्वरूप अतुल बलधामं। पूरण करन सुजन मन कामं॥ जियालाल अति पतित निदाना। तुम बिन रच्छा कारन आना ५१ यह अस्तुति अतिही सुखदाई। पढ़ै सुनै जो जनमन लाई॥ संकट दारिद निकट न आवै। अन्त बास श्रीपतिपुर पावै ५२ निष्ठा श्रवणमनंद घनेरे। इहिविधि सुनै चरित हरिकेरे॥ होली समयकेर इकख्याना। राधाकृष्णक करौं बखाना ५३ ब्रजचन्दिनि वृषभान नंदिनी। सुतीवात यह जगत बन्दिनी श्री·की नँदनन्दन श्रीब्रजचन्दा। सामा होलि लिये सुखकन्दा ५४ आवत धूमधामसेभारी। सहसन लाखन सखा सँभारी॥ मित्रन सखन सहित लखिनेरे। सखिन झुण्ड श्री राधाटेरे ५५ कोटिन झुण्ड आवतिहि काला। लीन्हे अगणित रंग गुलाला॥ गावंत अपर बजावत बाजा। चलीं राधिका सहित समाजा ५६ पहुँचीं मानसरोवर पासा। नँदनन्दनहु यूथ सहुलासा॥ पहुंचेआइ समीपमहाई। दोनों ओर रंगझरि लाई ५७ केतक अरगुलाब कस्तूरी। केशर गंध सुगंधन पूरी॥ ताभै बरषा प्रथम महाई। अपर रंग बरषा पुनिलाई ५८ कुमकुम अपर अबीर गुलाला। लालश्वेत पीले रँग चाला॥ हरे बैंजनी नाफरमानी। प्याजी सोसनिजाफरानी ५६ चले सुनहरी सन्दलि खाकी। लाजवर्दि तूसी अँग ताकी॥ कासनि अपर कंजई रंगा। फालसई मारततकि अँगा ६० शरबति ससखसि गंधकि मारौं। हास्यपरस्पर बचनउचारैं॥ रंगकरौंदिया अपरकपूरी। उन्नाबीहु अमौआभूरी ६१ चले अरगजा आदि अपारा। जियालाल रँगलहै कि पारा॥ यह वृत्तांत दूरिते भयऊ। दोनों यूथ भवहिं मिलि

गयऊ ६२ तब अत्यन्त बढ़ो मन हरषा। घनघमण्डि जनु रँग
जल बरषा॥ मलन गुलाल परस्पर होई। भई भीर भारी अति
सोई ६३ बरषे अमित रंग तिहि काला। धरणी व्योम भये सब
लाला॥ सुखदायक सामा अति भारी। लाड़िलि जी के यूथ
मभारी ६४ सेना बिजय रूप तिनकेरी। सजे साज जिन सखी
घनेरी॥ ललिता अपरबिशाखा नामा। श्रीशामला श्रीमतीभा-
मा ६५ धन्या अरु पद्मागुणखानी। भद्रा-चन्द्रावलि सुखदानी॥
सहसन यूथेश्वरी सुहाई। श्री लाड़िली संग छबिछाई ६६ ब्रज
किशोरिकर यूथ प्रबल अति। यद्यपि नटनागरहु यूथ अति॥
जिनके संग सखाबहु सोहैं। निज स्वरूप आगे जग मोहैं ६७
श्री दामा मधुमंगल नामा। सुबलहुयुत सुबाहु सुख धामा॥
अर्ज्जुन अपरभोज सुखदाई। मण्डल· यूथेश्वर बहुताई ६८ पर
शीघ्रग अरु लाघवताई। और दूसरी अति अधिकाई॥ पहुँची
सहायताहूतहँवां। श्रीवृषभान नन्दिनी जहवां६९ब्राह्मीपारवती
इन्द्रानी। आईचढ़ि बिमानसुखखानी॥राधेकी प्रसन्नताजानी।
रंगगुलाल पुष्पभरिठांनी७०दो०तिहिअवसर गोपीसबै धाईआ
नँदपाइ।दशदश ब्रजपति सखनप्रति· घेरिलीनहरषाइ७१चौ०॥
कोई रँगडारैं मनभायो। कोईमलैं गुलाल सुहायो॥ सबके हाथ
बन्दकरिदयऊ। करक्रिया लाघवता कयऊ ७२ सुन्दरता अनूप
दरशाई। करि कटाक्ष मन्दहु मुसकाई॥ तिरछी चितवनि फांस
चलाई। लीन्हें बांधि सखा ब्रजराई ७३ नन्दकिशोर काहँ बर-
जोरी। लीन खैंचि वृषभानकिशोरी॥गलेमाहँ लियकर लपि-
टाई। देखतबिशाखादि सबधाई ७४ श्रीब्रजराजछुटननहिंपाये।
भलिविधि रंगगुलाल लगाये॥ तब चन्द्रावलि लखियह लीला।
रही लाड़िली सो प्रतिकूला ७५ धाइ आइ ब्रजपतिहि सुनाई।
हम तुमरी सहाय अब आई॥ सावधान ह्वजे महराजा। मन
भावतो कीजिये काजा ७६ चन्द्रावलि सहाय को पाई। पकरि
नागरि हि लिय ब्रजराई॥ मनभायो बदलो लै लीन्हो। बिबिध

भांति फगुवा इमिकीन्हो ७७ ऐसे धूमधाम रँगबरषा। ठट्ठाहँसी करत मन हरषा॥ यह शोभा समाज सुखदाई। भक्तन के मन रही समाई ७८ ताच्चण श्रीब्रजनागरि की छबि। जियालाल किमि कहै मन्दकबि॥ मानहुशोभा निज बपुधारी। कोटिन रतिहि लजावनहारी ७९ कोटिन अम्बुज शोभाहारी। वारिज शोभा डारिय वारी॥ गोरे मुखपर बिथुरी अलकैं। चन्द्रिकाहु शिरफूलहु चमकैं ८० तिलक भाल में शोभित नीका। केशर कस्तूरी कर टीका॥ झूमक जड़ाउदार मनमोहे। कानन करनफूल अति सोहे ८१ सोहत नथ नासिका सुनीका। झीन दुकूल स्वर्णतारीका॥ लहँगा अमित रंग को सोहै। चमक दमक निरखत मन मोहै ८२ अंग अंग सब भूषण साजे। सब द्युतिवंत देखि द्युति लाजे॥ एकहाथ ब्रजपति गलडारे। सुभग गुलाल एक करधारे ८३ श्रीब्रजराजहु तन अति साजे। कोटिन मदन शोभ लखिलाजे॥ सुन्दर श्यामस्वरूप सुहावन। अलकैं बिथुरीं मुख छबिछावन ८४ शीश मुकुट अरु कुण्डल कानन। झूमक झूलत उपमा आनन॥ अंग अंग भूषण छबिमूला। कमर कसेहैं झीन दुकूला ८५ ब्रजनागरि गलकर लपटाये। दूजे हाथ गुलाल सुहाये॥ यह छबि प्रीतम प्रिया सुहाई। जियालाल अति सुखद महाई ८६ ब्रह्माशिवकी कौन चलावै। और देवताकीकोगावै॥ यह स्वरूप निरखत निज नैना। असको सुधि बुधि जासु हरैना ८७ श्रीब्रजराज किशोर किशोरी। आपुहि आपु बिलोकित जोरी॥ भये मग्न आनँदमें भारी। आपसमें तनदशा बिसारी ८८ प्रीतम प्रिया ध्यान यह गायो। भक्त जननको सुख दमहायो॥ जो यह ध्यान हिये में धरिहै। गोपद इव भवसागर तरिहै ८९ जो यह पढ़ै सुनै मनलावै। अन्तसमय गोलोक सिधावै॥ ऐसे चरित श्रवण नित कीजै। छांड़ि विषय अमृतरस पीजै ९० निष्ठा श्रवण महा सुखदाना। बरणी अरु कछु करत बखाना॥ भये

लीन या निष्ठा जोई। तिनके नाम कहौं कछु सोई ९१ दो०।
अर्जुन पितु तनुजापती तापितु तनुजास्वामि । जियालाल
तिहि सुतसुवन तास्यो ताहि नमामि ९२ रुक्म मातु पति
तात पितु तातियधर सुखखानि । जियालाल तांशुक पतिहु
भजन विना बड़ि हानि ९३ सो० ।धारिरामपद माथ सीता
लछ्मण नौमि पद। श्री नारद शुभगाथ बरणौं त्रिष्टप पावनी
९४ चौ०। भगवद्भक्ति कि निष्ठन माहीं। अग्रणीय नारदजी
आहीं॥ धर्म भागवतकेर प्रचारक। भगवत कीर्त्तन के विस्ता-
रक ९५ मिलो तिनहिं उत्तम पद जोई। भगवत चरित श्रवण
करि सोई॥ ताते तिनहिं श्रवण निष्ठामें। बर्णन कियो अमित
सुखजामें ९६ दो०। नारदभगवत मन अहैं ब्रह्माके सुतजोइ।
जगउपकारम प्रीति अति थिरतन बढ़ि घटिदोइ ९७ बालमी-
कि रामायणौ श्रीभागवत समेत। द्वैजहाजजग जलधि में जीव
पारके हेत ९८ चौ०। बने सुनारद के उपदेशा। जिनपर कृपा
करी सुखबेशा॥ भये सुभगवतरूप सुहाये। ध्रुवप्रह्लाद पुराण
नगाये९९साठिहजार पुत्रबड़भागी। दक्षप्रजापतिके अनुरागी॥
अपर प्रचेताआदिक लाखन। कौन सकै गणनाकरि भाखन
१०० जापर नारद क्रोधहु कयऊ।सो भगवत को प्रापतभय-
ऊ॥ हैं तिनके चरित्र बहुभाई। पूर्ब चरित्र कहौं अवगाई १०१
जासों यानिष्ठा में गाये। सो श्री मद्भागवत बताये॥ प्रथमकल्प
दासीसुत सोई। दुःख परे तिनमाता जोई १०२ निज मनटहल
ऋषिन की धरई। सुत समेत निजपालन करई॥ जब कहुँ
कामहेत सो जावै। ऋषिन समीप पुत्रतजि जावै १०३
तहां कथा सतसंग अपारा। ज्ञानविराग भक्ति सुखसारा॥ होत
सुनत नारद मनलाई। ताको प्रासभये सुखपाई १०४ जब उन
की माता तनुत्यागा। तब बनजाइ सहित अनुरागा॥ लागे
करन ध्यान तहँरूपा। एकबार हरिरूप अनूपा १०५ प्रगटि
हृदय अन्तर्हित भयऊ। तब नारद अतिशयदुख कयऊ॥

सोई रूपम प्रेम लगाई। भगवत भजन करत मनलाई १०६
ताको अन्तम यह फल लयऊ। कीइहिकल्प ब्रह्मसुत भयऊ॥
महिमाहोत भई इमितासू। ब्रह्मा कहि न सकत यशजासू १०७
दो०। इहिविधि नारदकी कथा कही महासुखदाइ। गरुड़कथा
अबवर्णऊं श्रीरामहिंशिरनाइ१०८दो०।गरुड़पार्षद विष्णुके सेवा
निष्ठामाहिं। उचितरहो तिनवर्णिबो परयासो कहयाहिं १०९
भयो एकवैमोहतिन कागभुशुण्डी पाहिं। सुनी कथा भगवान
की भयोज्ञान उरमाहिं११०चौ०।निष्ठाश्रवणमाहँ तिहि कारण।
तिनकीकथाकहीदुखदारण॥ जबश्रीरामलीनअवतारा। रावण
बधन उपाय विचारा १११ सेतु बांधि लंकाप्रभुगयऊ। नाना
भांति समरतहँभयऊ॥ बारिदनाद समरलखिआयो। नानाअ-
स्त्रशस्त्र झरिलायो ११२ बहु छलबल करि मायासाधी। नाग
फांस महँ रामहिं बांधी॥ जिनको नाम सुमिरि संसारा। भव बं-
धन छूटहिं दुखभारा ११३ तिनको नागफांस बशदेखी। नारद
गरुड़ पठाव विशेखी॥ व्याल बरूथ सकल तिनखाये। बंधन
छुटे रामसुखपाये ११४ करत विचार जात उरवीशा। कस अव
तार भयो जगदीशा॥ अलख अगोचर अव्यय जोई। ताको
बांधिसकै किमि कोई ११५ छूटै भव बंधन जपिनामा। बांधत
भो निशिचर सोरामा॥ विविध भांति इमि हृदय विचारी। प्रग
टित भयो मोह अति भारी ११६ व्याकुल गये आतमभूपासा।
बरणी सब आपनि इतिहासा॥ सुरजेष्ठ सुनि खगपतिवा-
नी। रघुपति मायाके वश जानी ११७ पठवतभये तिनहिं शिव
पाहीं। लिहिवैशिव कुबेर गृह जाहीं॥ कहीसकल तिनसो इ-
तिहासा। सुनि गुनि हरहरि प्रकृति प्रकाशा ११८ पठयो काग-
भुशुण्डि कि पासा। चले गरुड़ मंम सहित हुलासा॥ देखत
नीलाचल भ्रम गयऊ। काग समीप जात पुनि भयऊ ११९
तहां समस्त सुनी रामायण। नित्य ज्ञानभये पारायण॥ सत्य
पवित्र चरित भगवाना। मोह तिमिरभास्कर अनुमाना १२०

दो०। जियालाल कामद चरित सुरतरु सम सुरगाय ॥
सर्वकाल सबकाम तजि कहिय सुनिय मन लाय १२१ ॥
दो०। कथा परीच्छित नृपति की श्रवण निष्ठमें जोइ। रहेपुत्र अभिमन्युके अर्जुन नाती सोइ १२२ चौ०। अग्रणीय इहि निष्ठ मझारा। श्रीभागवत जगत बिस्तारा॥ जो सुनि जीव परम पदलायक। भये होत है हैं सुख दायक १२३ जबहिं पांडवन जगतजिदयऊ। नृपति परीक्षित को तब कयऊ॥ जबहिं परीक्षित नृपता पाई। पालत प्रजा नीति मनलाई १२४ एकसमय आखेट सिधाये। तहां चरित यह देखन पाये॥ एकधेनु बृषभागत आवत। तिनहिं शूद्र पीछे रपटावत १२५ जब समीप सब पहुंचे आई। शूद्रहि भूपति निकटबुलाई॥ कोतू इनहिं हेताकिहिमारे। काह अर्जुनहि गयो निहारे १२६ इमिनहिं पांडु बंशमें पैहै। जासु राज्यगो विप्रसतैहै॥ यह कहि नृपति खङ्ग कर लयऊ। ठाढ़ो सौहँ शूद्रतब भयऊ १२७ बोलि निकटगो बृषभहि लीन्हा। पूंछो हाल सकल कहि दीन्हा॥ कहबृषशूद्र सुकलियुगहोई। धावत धेनु भूमियह सोई १२८ मेरोअहै धर्मकर रूपा। कीन्हो व्याकुल कलियुग भूपा॥ तप अरु सत्य दया शुचिजोई। मेरेचारचरण हैं सोई १२९ सतयुग में रह चारौ चरणा। त्रेता त्रै द्वापर द्वै वरणा॥ कलियुग माहँ रहो पद एका। तासों चलि न सकत नृपनेका १३० पुनि पृथ्वी बोली नृप पाहीं। रहि न सकत मैं या युगमाहीं॥ शूद्र नृपत्ति मोपर बहु है हैं। नानाभांति पापसो कैहें १३१ मोसों बोझसहो नहिंजाई। ताकारण भागत दुख पाई॥ सुनिनृप कलिसों बचन उचारत। अबहीं तोहिंमारि हम डारत १३२ तब कलियुग अतिही भयखाई। कहो दीजिये ठौर बताई॥ ब्रह्मा रचे चारियुग जोई। मेटेमेटे जात न सोई १३३ नृपति परीच्छित बचन प्रकासा। एते ठौर करसि तैं वासा॥ जूप झूंठ अरु मदकी हाटा। वेश्याघर हत्याके बाटा १३४ सुवर्णचोरी येथल दीन्हो। कलियुग सुनत बास निज कीन्हो॥ निज

मनमें धर्महि नृपआनी। उरवी अपने रूप समानी १३५ आवत भये भुवन निज राजा। धर्म समेत करत सब काजा॥ बितित भे कितने इक दीना। गये अखेटहि नृपति प्रवीना १३६ लागी तिनहिं तृषा अतिभारी। कलियुग बास मुकुटमें कारी॥ तिहिवै निज प्रभाव सो ठाना। राजाको कीन्हो अज्ञाना १३७ व्याकुल तृषित गये तिहि ठामा। ऋषिशमीक बैठेतप धामा। बोले देखि ध्यानमें तिनहीं। तप घमण्ड आयो अति इनहीं १३८ हमहिं बिलोकि मूंदि चख लीन्हा। यह कहि मृतक उरग गलदीन्हा॥ जब घरजाइक मुकुट उतारा। भयोज्ञान तब करत बिचारा १३९ यह मैं जाइकर्म का कीन्हो। कलियुग मोसों पलटा लीन्हो॥ मुकुट माहँ सो रहो छपाना। मैं तौ यहकछु भेद न जाना १४० मैं मुनिको कीन्हो अपराधा। छूटैगो किमि पापअगाधा॥ इत शोचत इहिभांति नृपाला। उतमुनि तट खेलत बहुबाला १४१ तिन ऋषिसुतसों जाइ पुकारा। तुव पितु गले सांपकौ डारा॥ सुनि शृंगीऋषिअति रुट करिकै। जल कौशिकी हाथ निज धरिकै १४२ दीन्हो नृपति काहँ यह शापा। सप्तमदिवस डासिहि तुहिं सांपा॥ शापदेइ निज पितु पहँ आये। सर्प उतारिपिताहि जगाये १४३ अब पितु आपनि देह सँभारो। दीन्हींशाप सर्प जो डारो॥ सुनिशमीकऋषि नयन उघारे। पुत्र वचन सुनिभये दुखारे १४४ रेसुत महा अकर्महि कीन्हा। शाप धर्म मूरति नृपदीन्हा॥ जासुराज्य नहिं कोउदुखारी। रहत संगहरि धेनु सुखारी १४५ पाप बिचारन मनमें कीन्हा। गुण तजि अवगुणको गहिलीन्हा॥ शील स्वभाव साधुको चहिये। सबकी सुनियन निज कछु कहिये १४६ इहिविधि भाषि चुके मुनिजबहीं। लीन्हो बोलि शिष्य इक तबहीं॥ नृपति परीक्षित के ढिग जाई। दीजै शृंगी शापबताई १४७ लोग दोषतौ देहिं बनाई। परवह सावधान हुइजाई॥ यह सुनि शिष्य नृपति पहँ गयऊ। सब वृत्तान्त बतावत भयऊ १४८ सुनिनृप ठाढ़भये। करजोरी।

ऋषिमोपर किय कृपा घनेरी॥ बूड़त रहो शोकनिधि माहीं। ऋ-
षिमोकहँ काढ़ो गहिबाहीं १४९ जब ऋषि शिष्य विदा ह्वै गय-
ऊ। तबराजा विराग मन भयऊ॥ जन्मेजयको राजा कीन्हो।
अरु बहुभांति नीति सिख दीन्हो१५०बहुरिजाइ रनिवास विलो-
का। पुनि समुझायो देखि सशोका॥ धनजन कुटुम मोह तजि
दीन्हा। गंगातीर निजासन कीन्हा१५१ जो यह हाल सुनो दुख
माना। बहुरि सुनत आये मुनिनाना॥ आये सहस अठासी ऋषि
गन। सर्वकाललागो हरिजिनमन१५२ छन्दबरवा। आये व्यास
वशिष्ठहु भारद्वाज।कात्यायनहु पराशर नृपके काज॥ वामदेव
अरु नारदविश्वामित्र। अरुजमदग्निहु आदिक परम पवित्र
१५३सो०। बैठेसकल बिछाइ आसन आपन आपने। राजाको
समझाइ धर्म सुनावति भांतिबहु १५४चौ०। इतने में शुकदेव नृप
देखी। पुस्तक कांखमलिये बिशेखी॥ भेषदिगम्बर श्रीशुकदेवा।
आवत उठ सकल हितसेवा१५५ नृप करजोरि बचन कहिदीना।
नाथ कृपाअति मोपर कीना॥ पुनितिनको आसन शुभदयऊ।
बहुरि मुनिन सन बूझन लयऊ१५६ व्यास पुत्रहैं ये शुकदेवा।
पौत्र पराशर जानिय एवा॥ तिनहिं बिलोकि उठेसबकोई।यह
आश्चर्य्य हृदय मम होई १५७ तबहिं पराशर कह सुखपाई।
राजासुनिय बचन मनलाई॥ जो हम बड़े बड़े मुनिआहीं।ज्ञान
म शुकदेव कि समनाहीं १५८ ताते तिन सेवाहित लागी।उठे
सकल मुनिवर बड़भागी॥ अहो नृपति तेरो बड़भागा। जो
शुकदेवा बखानुरागा १५९ धर्मन में धर्मोत्तम कहिहैं। जन्म
मरण तेरो दुख दहिहैं॥ सुनत नृपति अतिशय सुखपायो।
श्री शुकदेव चरण शिरनायो १६० मोसों कहौ जगतसुखपांती।
कर्म ग्रंथि छूटै किहिभाँती॥ पुनि मेरो है पापमहाना। सात
दिवसकी अवधि निदाना १६१ दो०। सुनिभूपति के बचन
इमि श्री शुकदेव कृपाल। कहो सातदिन बहुत हैं शोचत कि-
मि महिपाल १६२ एक घड़ीमें होत है मुक्ति सकल सुखखानि।

तेरेसौ हैं सात दिन तूजनिहिय दुखआनि १६३ श्री नारदख-ट्वाङ्ग को दीन्हो ज्ञान बताइ। द्वैघटिमें पावत भयो मुक्ति महा सुखदाइ १६४ चौ०। सुनि मुनिबचन सुखी नृपभयऊ। बहुरि इविधिते पूंछन लयऊ॥ सब धर्मनमें उत्तम जोई। कहिय बुझा-इ मोहिं मुनि सोई १६५ कह मुनि सुनिय नृपति मनलाई। उत्तम बैष्णव धर्म सदाई॥ बैष्णव धर्मोत्तम जिमि धर्मन। श्रीभागवत पुराण सुसर्बन १६६ जहँ हरिकथा भक्त हरिगावैं। तीरथ सकल तहां चलिआवैं॥ सकल धर्म अरु वेद पुराना। बासकरत ताही अस्थाना १६७ परभागवत समान न कोई। ताते मैंबरणौं नृपसोई॥ हैंद्वादश स्कन्ध सुखदाई। महापुराण सुनौ मनलाई १६८ कहि शुकदेव सुनावन लागे। लागे सु-नन नृपति सुखपागे॥ उद्भव पालन प्रलयकहानी। कहतभये सुन्दर सुखखानी १६९ पुनि हरि चतुर्विंश अवतारा। बर्णनकी-न्हे ब्यास कुमारा॥ कर्म भक्ति योगहु विज्ञाना। बरणे अपर सरिण विधिनाना १७० राजा सुनि सारांश बिचारी। करि समाधि तनदशा बिसारी॥ भयोप्रगट तक्षक तिहि बेरा। पूरण कियो बचन मुनिकेरा १७१ तनतजि नृपति जातभे तहवां। घूमतबहुरिनजाइक जहवां॥ यहश्रीमद्भागवत पुराना। अर्था-दिकदायक सुखनाना १७२ ज़ियालाल हरिचरितन माहीं। मनलगाउ गुनि सकल बृथाहीं॥ यह नरदेह बिषय हितनाहीं। मिलो पोत भवसागर माहीं १७३ दो०। खरकूकर शूकरसहित अपरजीव जगजोइ। मैथुननिद्रा अशनहू जानत बहुबिधिसोइ १७४ हरिचरित्र जानत नहीं सुनहु सुजन दैकान। गावनहरि-यशबिषयवश तेनरइनहिं समान १७५ कालपाइ ये करतहैं मैथुन तपवनदाह। विषयीनर दिनप्रति करत किमिहोवै निर्वाह १७६॥

चौ०। अब श्रीरामचरण शिरनावों। लालदास की कथा सुनावों॥ ऐसे भगवत भक्त सुहाये। भगवत कथा सदा चित लाये १७७ भगवत में अति प्रीति सुहाई। गुरुपदरासत

नेह सदाई ॥ बिषमें रहतसुबिष जिहि भांती । तिमि जगमाहँ रहे सुखपांती १७८ कुण्डलियाछंद । जो श्री मद्भागवत्त की कथा महासुखदाइ । होतबघेरा ग्राम में सुनतरहे मनलाइ ॥ सुनतरहे मनलाइ भईपूरण जबगाथा । तबहीं धारिसमाधि ध्यान कीन्हो रघुनाथा ॥ त्यागिदेहसुख सहित गयेतिहिथल सुखदाई । घूमतनाहिं बहोरि जौन थलमें जोजाई १७६ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियांलालजन्माग्रेणविरचिते चतुर्विंशतिनिष्ठामध्येचतुर्थमाहात्म्यश्रवणनिष्ठायांवेद भक्तकथावर्णनभक्ताम्बुनिधौषष्ठस्तरंगः ६ ॥

दो० ॥ कुम्भसुवन अरिकी सुता तापति कोमल गात । जियालाल उरध्यानकरु त्यागि कपट अहरात १ सीपीसुतभषु जासु है सोबाहन है जासु । जियालाल तिहिपति चरण हृदय लाइये आसु २ हरिसुत पितु पितु तात तिय ताबाहन युत नारि । जियालाल अस्तुति करत चरणन में शिरधारि ३ छंद बरवा । निष्ठापंचम कीर्त्तन अति सुखदाइ ॥ वर्णनपन्द्रह भक्तनकथा सुहाइ ॥ श्रीसीतापतिरेखापद जब जोइ । बन्दौं दत्तात्रैबपुधारोसोइ ४ कूटचित्र गिरि ऊपरधरि अवतार । अत्रि ऋषेश्वर के घरअति सुखसार ॥ अलरकअरु प्रह्लादहि दीन्हो ज्ञान । बंधन जगत छुटायो दयानिधान ५ चौ० । यद्यपि कर्त्तिन शब्द जु सोई । आवतहैं कहनेपर जोई ॥ शास्त्रपुराण परन्तु बतावैं । हरिचरित्र यहनादलखावैं ६ मिथ्या बादमनाहिं बखाना । भगवतकीर्त्तनहैं बिधिनाना ॥ नानाभांति चरित हरिकेरे । भाषिय सुनिय प्रेमरुचितेरे ७ गानकरन अथवा गुणगाथा । विरचनकाव्य भक्तिरससाथा ॥ रचनाकाव्य अमितसुखदानी । परहरिहरिजनके रससानी ८ काव्यरचन मन अनत न जावै । रात्रिदिवस तामें हिरहावै ॥ रहतबिचारत दिन औ राती । हरबर लिखतजात सुखपांती ६ सुन्दरछंद प्रबन्ध बनावत । मनहु स्वर्गसो पानलगावत ॥ जोईतामें चित्त

लगावै। सोतनत्यागि बहुरिनहिंआवै १० कहैं सुनैं तिनकी यह बाता। काव्यरचैं तिन कही न जाता ॥ भगवत कीरति जगतपसारैं। बायु बलाहकके गुणधारैं ११ दो०। जामेंहोवैंहरि चरितकीर्त्तनसोईजान।कीर्त्तनमें जामनरमो सोईबन्यनआन१२ सो०। भयेभक्तजे कोइनिष्ठाएहीतेसकल।बरणिसकियनहिंसोइ। ताते कछु थोरेलिखत १३ चौ०। कीर्त्तन निष्ठा महिमा जोई। वर्णन कौनसकै करिसोई॥ तारण तरण चरण है जोई। वेद पुराण जगत कह सोई १४ या निष्ठा कि उपासक हेतू। पुनि पुनि पुनि आनन्द निकेतू॥ निष्ठा श्रवणम जो यह गाना। श्रवण प्रभाव मिलत भगवाना १५ ताको तात्पर्य है एहा। हरिचरित्र सुनि सहित सनेहा ॥ ताको कीर्त्तन करै सदाई। तब प्रसन्न होवैंरघुराई १६ दो०। श्रवण एक साधन अहै भगवत कीर्त्तन हेत। ताको फल कीर्त्तन अहै वर्णतबुद्धिनिकेत १७ भगवत कीर्त्तन होत जहँ बसत तीर्थ तहँ आइ। बहुरिपुराणन के विषे भगवत वचन सुनाइ १८ मैंन बसत बैकुण्ठमें योगिन उरमें नाहिं। करत भक्त कीर्त्तन जहां मैं तहँ बसत सदाहिं१९ चौ०। पुनि श्रीमद्भागवत उचारी। सतयुग माहँ ध्यान हरि धारी॥ त्रेतामांझ यज्ञको करिकै। द्वापर हरिपूजन सुद भरिकै २० होती रही मुक्तिहै जोई। कलियुग हरि कीर्त्तन करि सोई॥ लिखी विष्णु धर्म्मोत्तर बात्ता। भगवत कीर्त्तन सबसुख दाता २१ पुनि मनकाँहै विमलता दानी। धर्म बढ़ाव पापकर हानी॥ भक्ति मुक्ति दायक सब लायक। परम सार पुनि अंत सहायक २२ दो०। उवैं अर्क वारुणि दिशा लागैं चलन सुमेरु। शिखि शीतल बिन हरिभजन होइ न जगत निबेरु २३ चौ०। लिखी कीरतन बिधिइहि भांतीं। होइमगन कीर्त्तन सुख पांती॥ विग्रह दशा भूलि जब जाई। बात स्मरण एक इत आई २४ कोइ समय द्वैजन इकसाथा। कही सुनी भगवतकी गाथा॥ वे सुध है तन तजे बिशेखी। फूंकि दियो लोगन तहँ

देखी २५ तिहिअवसर तिनकीतिय आई। लीन्हें पतिनअस्थि बिलगाई॥ कहत लोग आश्चर्य्य अपारा। लीन्हें अस्थि कौन परकारा २६ कह बक्ता तिय ममपति जोई। डूबो हरिचरणनरस सोई॥ अस्थि अस्थि तारस गलिगयऊ। ताते तुरित जानि मैं लयऊ २७ पुनि बोली श्रोताकी नारी। भगवत चरित तीर संभारी॥ बक्ता मुख चुटकी सो मारा। ममपति अस्थि अस्थि भे पारा २८ छिद्र देखि निजपति पहिचाना। इमिदोउन मिलि कीन बखाना॥ कीर्त्तन की बिधि जानिय सोई। जब बक्ता श्रोता इमि होई २९ शास्त्र परंतु कहत इहिभांती। भगवत कीर्त्तन जो सुखपांती॥ अंतःकरण उपर ते जोई। दशावन जग के हित सोई ३० दो०। अथवा फल के हेतु जो निश्चय कोई रीति॥ भगवद्भक्तिहि पावई अरु दारै जगभीति ३१ सो०। सीय रामपद माथ नाइसंतपद रज सुमिरि। अत्युत्तम शुभगाथ बाल्मीकिजी की कहत ३२ चौ०। बिप्रबंश में जिन जनु लयऊ। शिशुपन भील हाथ परिगयऊ॥ पुत्रमानि तिहि पालन कीन्हा। निज कुल में बिवाह करिदीन्हा ३३ लागे ठगी करन बहुभांती। उद्यत पथ लूटन दिन राती॥ ब्याधकर्म में निपुण महाये। तहँसप्तर्षि एकवै आये ३४ तिन लूटन की इच्छा कयऊ। तबहिंसप्तऋषि पूंछत भयऊ॥ ऐसे दुष्ट कर्म किमि करता। बोले पुत्र कलत्रन भरता ३५ पुनि सप्तर्षिकहो सुख पाई। जिन हित करत पाप समुदाई॥ तब अघ दुखहैं साझीवई। सो सुनि बूझनगे हुततेई ३६ तिन सब अंगीकार न कीन्हा। सोई ऋषिन पाहँ कहि दीन्हा॥ बोलत भये सप्तऋषि ओई। तेरेमेंसाझी नहिं सोई ३७ तूक्यों निज परलोक बिगारत। तिन को मोहजाल किन दारत॥ सुनि इमि वचन दरश करितिन के। भयो बिराग प्रगट उर इनके ३८ निज कल्याण राह कर जोरी। पूंछतभे तब ऋषिन निहोरी॥ नयनन माहँ अश्रुभरि लीन्हे। बिनती बहुरि बिबिध बिधि कीन्हे ३९ दो०। रामना

म उपदेश किय दया धारि सप्तर्षि। सीयराम सुमिरण करतजा-
तभये हियहर्षि ४० चौ०। रामराम विस्मृत है गयऊ। ताथल
मरा कहन तिन लयऊ॥ करि एकाग्र चित्त तहँ जोई। लागे
जपन नाम वह सोई ४१ कछु दिन गये सप्तऋषि आये। बाल-
मीक अन्वेषण लाये॥ लीलादेखत भे तिनकेरी। ऊपर भइ
बामी बहुतेरी ४२ जात निकट पशु पच्छी जोई। रामराम रट
लावत सोई॥ जानि चिह्न इहि भांति निकारा। शुद्ध सिद्ध
गुनि सकल प्रकारा ४३ वेद शास्त्र धर्मकर्म्महुँ काहीं। शिक्षाक-
रन प्रयोजन नाहीं॥ नाम प्रताप जानि सब लीन्हा। हर्षित
गमन ऋषिन तब कीन्हा ४४ बामीजमोदेह तिनकेरी। सर्पादि-
क जहँ भये बसेरी॥ तासों बालमीक असनामा। धारणकरतभ
येतप धामा ४५ जबत्रिकालदर्शी मुनि भयऊ। तबविचारानिज
मानस कयऊ॥ भो यह जाके नाम प्रभावा। तासुचरित्र चहिय
कछुगावा ४६ दो०। एकक्रौंचवी बिहरतो सहितकाम मदभाव।
दया हीन इक बधिक लखि तासुसमीप सिधाव ४७ क्रौंचीपति
मारतभयो मासस्वादी सोइ। देखि मृतक निज पति बिकल
उच्चस्वर सों रोइ ४८ देखि बिकल बाल्मीक तिहि क्रोधित बधि-
कहि आप। सुरसरिजल आचमन करि लगेदेन इमिशाप ४९
श्लोक। मानिषादप्रतिष्ठात्वंमगमःसास्वतीसमाः। यत्क्रौंचमि
थुनादेकमवधीःकाममोहितम् ५० चौ०। भो अश्लोक शापके
देता। चारु चारिपद ललित समेता॥ यह सुनि कहे महीसुर
आना। धन्य धन्य तुम साधु सुजाना ५१ शापदेत तुम्हरेमुख
माहा। आईसरस्वती गुणगाहा॥ तिहिअश्लोक प्रबंध बनाओं।
तिहि प्रसाद निजलोक सिधावों ५२ यामें संग्रह अहै अनूपा।
हम किहि भांति कहैं मुनि भूपा॥ बाल्मीक सुनि आनंद पाये।
सुरज्येष्ठ तिहि अवसर आये ५३ लिये संग सुत कहलोकेशा।
धन्य धन्य तुम धन्यमुनीशा॥ प्रथमश्लोकरचो सुखदाई। रा-
मायण विरचहु मनलाई ५४ परम रम्य पदरचहु बिचारी। बरण

मधुर अति आनँद कारी॥ यासों निर्मल सुयश तुमारा। कल्प अंत लगहोइ अपारा ५५ धन्यतासु बाणीजग बीचा। तरुयश राम प्रेम रससींचा॥ ताके छन्द प्रबंध बनावैं। रामसमीप अंत वैजावैं ५६ बहुरि सोइ सुनि चरित वदारा। होवैजगत जनन उद्धारा॥ इहिसमान उपकार न दूजा। तपनहिं जपनहिं पाठन पूजा ५७ दो०। कामकथा जे बर्णहीं तिनते अधम न आन। सूतक अघलागै तिनहिं कीन्हो सत्यबखांन ५८ चौ०॥ ताते रामचरित सुनि कहिये। प्रेमसहित अघ संशय दहिये। अब्ज योनि इहिभांति बखाना। त्रिदसन युतभे अंतरध्याना ५९बा-लमीकमन करत बिचारा। जो इहि वैकःवचन उचारा॥ बिरचौं रामायणिकिहि भांती। बरणौं सुनी न सोसुख पांती ६० कहि सुरसरिके कूल मझारा। लागे करन ध्यांन तिहिबारा॥ तिहि वेला सुनि हृदय मझारा। प्रगटे श्री दशरत्थ कुमारा ६१ नील कंजघन श्यामल अंगा। लाजत बपुलखि अमित अनंगा॥ दृगराजीव लजावन हारे। मुखछबिकोटि इंदुद्युति दारे ६२ क्रीट मुकुट शिरऊपर धारे। पीतवास चपलाछबि दारे॥ सुन्दर उर बनमाल बिराजत। बहुभूषण कौस्तुभ मणिराजत ६३ कम्बु कण्ठ उरआयत शोभा। बाहुअजान देखि मनलोभा॥ नाभि गँभीरभ्रमर यमुनांसी। कटि कृशहरिसमान सुखरासी ६४ जन्हू रंभासरिस सुहाई। पादांगुली अमितसुखदाई॥ तिनमहँ सोह-त द्युतिनख पांती। चन्दू किरण सोहत जिहि भांती ६५ कोश गुलाब पादतल शोभा। सुनिमन भ्रमरसंदा जहँ लोभा॥एंड़ी नारंगी समसोहत। निरखत मुनि जनको मनमोहत ६६ धनुष बाण दोऊकरधारी। कटिभाथाजन बिपति बिदारी॥ मन्द मन्द मुसुकात कृपाला। सोहत भृकुटि कामधनु चाला ६७ जिया-लाल शोभा किमि गावै। शारदअहि अज पार न पावै॥ इहि बिधिध्यान मांझमुनि देखा। उपजा उर आनन्द बिशेखा ६८ भूत भविष्य चरित सुखसारा। बहुरिहृदय निजमांझ निहारा॥

रामकृपा निजऊपर देखी। पायोमुनि आनन्द विशेखी ६९ वर्ण-
न लागे रामचरित्रा। बिच बिच कथा अनूप पवित्रा॥ कहेकांड
षट आनँद पाई। प्रथमहि बालकाण्ड सुखदाई ७० दूसर किय
आरण्य बखाना। तीसर किष्किंधा सुखदाना॥ चौथो सुन्दर
अति सुखदायक। पंचम युद्धकाण्ड सबलायक ७१ छठयोंउत्तर
अति सुखबाशा। इहिप्रकार मुनि कीन्ह प्रकाशा॥ अबसंक्षेप
कहौं कछुगाई। काण्डंन प्रति मुनि जिविधि बनाई ७२ बालम
दशरथसुत के हेता। बोलेशृंगीऋषि सुख केता॥ बिधिवत यज्ञ
कीन्ह नृपराई। परब्रह्मतिनसुत भे आई ७३ दो०॥ गाधिसुव-
नकी यज्ञते गेसानुज इकबार। मारीचहि इकशरहयो सदल
सुबाहु सँहार ७४ चौ०। तारिअहल्या नगर विदेहा। नृपमद
खण्डि धनुषयुत नेहा॥ सीताब्याहि नगर निजआये। घरघर भे
आनन्द बधाये ७५ नृपति देनलागे युवराजू। सुनि केकईदिये
बनसाजू॥ सियगुत गवनत भे द्वौ भाई। सुरसरि तरि मुनि बेष
बनाई ७६ चित्रकूट पहुँचे रघुराई। इतमें भरत अवध पुरआई॥
रामगमन बन सुनि दुखपाये। चित्रकूट युतबंधु सिधाये ७७तब
रघुनाथ भरत समुझाये। घूमें पादपीठ प्रभुपाये। नन्दिग्राम
बास तिन लयऊ। मुनिवर बालकहतइमि भयऊ ७८ पुनिआर-
ण्य कहनमुनि लागे। अत्रि आदि मुनिवर बड़भागे॥ तहँ
तहँ रामलषण सियगयऊ। शूर्पणखा विरूप पुनि कयऊ ७९
दो०। खरदूषण त्रिशिरादि खल सहसचतुर्दश आव। श्रीरघु-
नंदन एकशर सबको मारि खसाव ८० कपटकुरंग निपातिसिय
हरिदशास्य रघुनाथ। सहसिय विरहकबंध हति गृद्धहि कीन
सनाथ ८१ चौ०। शवरी मिलि पंपासरजाई। हनुमत मिले
अग्रचलि आई॥ इमि आरण्यकाण्ड मुनि गावा। किष्किन्धा
अब कहत सुहावा ८२ प्रथमसुकंठ मिलाप्रभु आई। सप्तताल
बेधे रघुराई॥ बालिहि बधि सुकंठ कियराजा। बर्षागुनि निवसे
रघुराजा ८३ लषण सुकण्ठहि भयदरशायो। सो सभीत कपि

भालु बुलायो ॥ सीयखोज हितदिगन पठाये । हनुमदादि वारिधितटआये ८४ भे बिलोकि सम्पाति सभीता । सो दिखाइ दीन्हों तबसीता ॥ लांघ महोदधि तब हनुमाना । इमि किष्किधा काण्ड बखाना ८५ पुनि सुन्दर बरणों मुनि राई । रजनि लंक हनुमानमझाई॥ लखि अशोकबाटिकाम जाई। सियहि दीन मुद्रिका सुहाई ८६ प्रभुकी कथा कहत पुनिभयऊ। कानन भंग बहुरिकपि कयऊ ॥ बंधन सहि लंका कपिजारा । सिय प्रबोधिगे सागरपारा ८७ मिलिकपि सकल रामपहँआये। सीता सुधि रघुबरहि सुनाये ॥ सानुज राम जलधि तट आये । मिले बिभीषण सुख सरसाये ८८ दो०। सेतु बांधि प्रभु पारसँग मैमू खिर्श महान । शुकसारन दरशाव दल इमि सुंदर किय गान ८९ चौ०। लंकाकाण्डम दश शिर मारा। कटक समेत न एक उबारा ॥ जनकसुता समेत सुखपाई। पुष्पक चढ़ि गमने रघुराई ९० उत्तर माहँ अवध प्रभु आये । घरघर भे आनंद बधाये ॥ पुनि अगस्ति कर आयसु पाई । अश्वमेध कीन्हो रघुराई ९१ येषटकाण्ड सकल जग जाना।बालमीकि मुनिप्रथम बखाना ॥ संख्या चौबिस सहस सुहाई । जियालाल संक्षेपहि गाई ९२ दो०। पढ़ै सुनै मन लाइ जो नाशैं तीनों ताप । जाइ अंत रघुपति निकट दारि सकल जग पाप ९३ चौ०। अब जो यह षटकाण्डन माहीं। वर्णन कीन प्रथमकी नाहीं॥प्रथमहि श्री बालमीकि सुजाना । किय शतकोटि सुयश प्रभु गाना९४ ताहि सदाशिव त्रैथल कीन्हा । स्वर्ग मृत्यु पातालम दीन्हा ॥ ताकी संख्या कहौं बखानी । सुनहुसंत जन मानस आनी ९५ तेंतिस कोटिहु लच्छ स्वै सोइ सहससैतीनि ॥ तेंतिस ऊपर बर्णदश द्वै अच्छर शिवलीन९६चौ०।बांटि दीन इमि तीनिहु लोका ॥ पढ़त सुनतजन होत बिशोका। बर्ष सहसदश प्रथम उचारा॥ पीछे भयो राम अवतारा ९७ देखिय करिबिचार इहि भांती । नाम प्रताप प्रगट सुख पांती ॥ प्रथमहिं जिन बालमीकि कि छाया। नहिंअ-

स्पर्श करत मुनिराया ९८ सो बाल्मीकि नाम परतापा। प्रगटो सुयश जगत हरतापा॥ रामनामको अमित प्रभावा। भाषि न पार सहसमुख पावा ९९॥

दो०। कथा कहत शुकदेवकी अघगिरितूल कृशान। ऐसो को कवि जगतमें तिन यशकरै बखान १०० छन्दरामगीतिका। कहो निजसुख भागवत जिन अमृतकी सरिताहि। पानकरतै अमरहोवै जगत जालनंशाहि॥ एक वैतियकरत मज्जन आवशुक तिहिकाल। कीन ब्रीड़ा देखिव्यासहि कीनलज्जाबाल १०१लीन अम्बर देखि तिनसों पूंछियो तबव्यास। गयोमोसुत अग्रकाहेकी नलज्जातास॥ दीयउत्तरतीयते गुनजगत भगवतएक। आपतौ बहुरूप जानत ज्ञानभांति अनेक१०२ दो०। ताते तवलज्जाकरी सुनहु व्यासमनलाइ। यहगाथा इमिजन्मशुक सुनहुसंतसुखदाइ १०३ चौ०। मातुगर्भ शुकदेवसुजाना। भगवद्भक्तिज्ञान सबजाना॥ ताकोकारण कहौं बुझाई। जोसुनि जगभ्रमभ्रासु नशाई १०४ शिवसों पार्वती इकबारा। ज्ञानतत्त्व पूंछासुखसारा॥ तब शिव आश्रम जीवभगाई। लगेकहन गिरिजहि समुझाई १०५ कछुसुनि आधनींद गिरिजांहीं। रहो एकशुक बालक ताहीं॥ भगवत इच्छा अति बलवाना। सोई पारवती जब जाना १०६ देनहुँकारिलाग शुक जोई। भयोअमर सुनि ज्ञानहिं सोई॥ नीलकंठ जानो यहहाला। क्रोधवन्तधाये ततकाला १०७ गंगाधरहि क्रोधयुतजाना। भागि व्यासतिय उदर समाना॥ बधन हेतु तहऊं शिव गयऊ। ब्यास प्रार्थना ते तजि दयऊ १०८ द्वादश वर्षजन्म नहिंलीन्हा। सुरऋषि आइबिनय बहुकीन्हा॥ तब जन्मे शुकदेव कृपाला। बनको चलि दीन्हो ततकाला १०९ तिनपीछे धाये सुनि व्यासा। हेसुत हेसुत बचन प्रकासा॥ मोह विवश आवतलखि धाये। वृक्षनद्वारा बचन सुनाये११०मैं तुम सुख दुखजग भ्रमजानौ। सुतपितु बचन मृषापुनि मानौ॥ तुमपितु भे बहुबार हमारे। पितुभे हमबहुबार तुमारे १११ देखत

सुनत जौन जगमाहीं। भगवत रूपआन कछुनाहीं॥ बिद्या भगवत जानन हेता। ताको पाइन छूटै द्वैता ११२ दो०। सो बिद्या निष्फल अहै सुनि उत्तर इमिव्यास। पुत्रमोहमें मनबँधो आये भुवनउदास ११३ चौ०। परबिचार इमि मानसधारा। जिमि आवैं शुकदेव उदारा॥ श्रीमद्भागवते अश्लोका। बहु-बालकन पढ़ाइविशोका ११४ बसत जहां शुकदेव कृपाला। तिहिबन दिय पठायबहुबाला॥ श्रीशुक इकदिन इकशिशुमु-खते। यह अश्लोक सुनत भे सुखते ११५ पापात्मापूतनाम हाई। बिषलगाइ हरिमारन आई॥ ताको जननीकी गति दी-न्हा। अतिआश्चर्य सुनत शुककीन्हा ११६ दूसरको दयालु जगमाहीं। जाकी हमशरणागत जाहीं॥ श्रीशुकबँधे प्रेमकी फासा। पूंछोआइ बालकन पासा ११७ दो०। पढ़ोकासुढिग तिनकहो पढ़े व्यासके पास। पढ़नहेतु शुकव्यास ढिगआये सहितहुलास ११८ पुनि श्रीमद्भागवत को पढ़तभये सुखपाइ। इच्छाभैको प्रेमिको दीन्हो चहिय सुनाइ ११९ छन्दबरवा। पर देखोअधिकारी नाहींकोइ। योग्य बिचारि नितान्तपरीक्षित सोइ॥ गंगातट तिनकाहीं दियो सुनाइ। सप्तदिवसमहँ कीन्हों मुक्तबनाइ १२० दो०। सुनि जिनजिव तिहि सभामहँ भेभग-वतमय गात। अजहुँसुनत जो प्रेमयुत हर्षिपरमपद जात १२१ गाथा श्रीशुकदेवकी इविधि प्रेमरस लीन। जियालाल शठ किमि कहै अति मतिमन्दमलीन १२२ दो०। अबबरणौं जय-देवकी कथामहासुखदान। मण्डलीक कवि नृपनमें चक्रवर्त्ति नृपजान १२३ सो०। रचो गीतगोबिन्द तिहिप्रकाश तिहुँलोक इमि। तापहरण जिमिइन्दु कोककाव्य नवरससहित १२४ चौ०। अरु शृंगार समुद्र महाई। जाकी अष्टपदी सुखदाई॥ प्रेम समेत पढ़त जो कोई। निश्चय बहुशास्त्रज्ञसुहोई १२५ पढ़त जहां कोई मनलाई। भगवत आपसुनत तहँ आई॥ भगवद्भक्त प्रसून समाना। भगवत भगसम तिनसुखदाना १२६ है शृंगार

कोक जो यामें। बिषयिन मन बेधतनहिं तामें॥ बिषयिन मन बर्त्तत है जोई। है बरणो यामें नहिंसोई १२७ यामें बरणो सो शृंगारा। भगवत शोभा अगम अपारा॥ है रसराज जासु को नामा। जासों प्राप्तहोत सुखधामा १२८ दो०। होतभये कुड विल्व में श्री जयदेवकवीश। रसनृप रसशृंगार के मूरतिबिस्वा-बीश १२६ चौ०। तासुस्वाद निजमन में जाना। रहे इबिधि वैराग्य निधाना॥ पादपछांह करन निशि वासा। गुदरिकम-गडलु अपरनपासा १३० कियो प्रतिज्ञा ब्राह्मण कोई। यहमेरी तनुजाहै जोई॥ जगन्नाथजी कोसो देहौं। इतनो सुयशजगत में लेहौं १३१ पुनि तनया निज ब्राह्मण लायो। तब श्री जग-न्नाथ समुझायो॥ है जयदेव स्वरूप हमारा। तिहि कन्यादेबिप्र उदारा १३२ सुनि जयदेव निकट सो आयो। तिनको सब बृत्तांत सुनायो॥ सुनि जयदेव कहो द्विज पाहीं। कन्या देन योग हम नाहीं १३३ कन्या देन धनी को चाही। हम बिरक्त फक्कड़नक नाहीं॥ तबब्राह्मण बोला तिनपाहीं। भगवतआज्ञा मम बश नाहीं १३४ कह जयदेव जो कि प्रभु वे हैं। शोभित लाखन तिय उनकोहैं॥ मोहिं पहारसमान लखावैं। तब ब्राह्मण तिनको समुझावै १३५ नहिंमानो जयदेव सिखावा। द्विज निज कन्यहि धर्मबतावा॥ धर्म सिखाइतहाँ ताजि गयऊ। तब जयदेव कहन इमि लयऊ १३६ तू निज पितु के भवनसिधावै। मेरेसंग दुःख अति पावै॥ तिहि जयदेव बिबिध समुझायो। पर कन्या नहिंचित्त डुलायो १३७ दो०। भगवत आज्ञा जानिकै कुटीबनायो एक। भगवतको पधरायके पूजत सहितविवेक १३८ रचत गीत गोविन्द तहँ अष्टपदी इक माहिं। प्रियाभाव को ध्यान इमि लिखन चहे लिखि नाहिं १३९ चौ०। की श्री-कृष्ण स्वामि सुखकारी। प्रियहि मनाव दीनता धारी॥ दूरकरन वालो बिषकामा। तव पद कमल पवित्र ललामा १४० मम म-स्तक धारण करुआनी। लिखि नहिं सके ढिठाई जानी॥ द्वि-

तिय भाव चिन्तामणि देता। चलेगये अस्नानकि हेता १४१
तब भगवत जयदेव स्वरूपा। सोई पद लिखिदीन अनूपा॥ म-
ज्जनकरि जयदेवजुआये। प्रथम बिचारित पद लखि पाये १४२
पद्मावति सन बूझन लयऊ। यह पदअत्र कौन लिखिगयऊ॥
कहतिय अबहिं आपु लिखिदयऊ। बहुरिआइ पूंछतका भयऊ॥
१४३ भगवत चरित जानि तब लीन्हा। गोविंदगीत धन्यकरि
चीन्हा॥ यहजो सुखदगीतगोविन्दा। अघगिरिदारन आनँद
कन्दा १४४ राजा जगन्नाथपुरि जोई। गोविंद गीत रचो पुनि
सोई॥ गीत नृपति जयदेव उदारा। जगन्नाथ मन्दिरमें धारा
१४५ तब श्री जगन्नाथ हरषाई। लिय जयदेव गीत उरलाई॥
राजा लखि लज्जित मनहोई। बूड़न चलो जलधि कहँ सोई
१४६ जगन्नाथ कह नृप सुनिलीजे। बूड़िय नाहिं न्याव मन
कीजै॥ श्री जयदेव भक्ति कविताई। अग्रन पहुँचत तव नृप
रांई १४७ जो तुम यह हठ करत महीपा। तौ सुनिलेहु क्षत्रि
कुलदीपा॥ सर्गप्रति तिन गीत मझारा। रहिहै एकश्लोक तु-
म्हारा १४८ पर जयदेवकेरही नामा। रहिहै ख्यात सकल गुण
धामा॥ बारह सर्ग गीतगोविंदा। गायक घायक दुख सुख
कंन्दा १४९ एकसमय इक मालिकि कन्या। पञ्चम सर्ग अष्ट-
पदि धन्या॥ बैंगन तोरत गावत जाई। जगन्नाथ स्वामी
सुखपाई १५० जहांजात मालीकि कुमारी। तहांजातपीताम्बर
धारी॥ फटोझँगा कंटक बहु लागी। दर्शन हित आयो नृप
भागी १५१ झँगा देखि चकृत चित भयऊ। तब पंडनसों पूंछन
लयऊ॥ काहू ने कछु नाहिं बतायो। जगन्नाथ तिहि उर दर-
शायो १५२ राजा करि निश्चय मन भारी। डौंड़ी फिरवायो
पुर झारी॥ श्री गोबिन्द गीत पढ़ जोई। पढ़ै पवित्रस्थानम
सोई १५३ शुद्धगमत ह्वै पढ़ै बनाई। भगवत आप सुनत
मनलाई॥ मुग़ल एक कीरं प्रेम अपारा। पढ़त सदा यह पोथि
सुखारा १५४ एक दिवस सो वाजि सवारा। प्रेम भाव से मग्न

अपारा ॥ अष्टपदी गावत युत नेहा । भगवत दर्शन दै कह एहा १५५ सुनत साथ हम अहैं तुम्हारे । गावत चलौ अहो सुख सारे ॥ गोबिंद गीत महात्म अपारा । बरणि प्रताप लहै को पारा १५६ स्वर्ग लोक सुर कन्या गावैं । नाना भांति भाव दरशावैं ॥ एक समय जयदेव कृपाला । मारग चले जात तिहि काला १५७ लागे ठग मन कीन बिचारा । पाप मूल धन रोग अहारा ॥ दुख का मूल नेह गुनिलीजै । इन तीनों को त्यागन कीजे १५८ दो० । यह बिचारि निज पासजो दियो ठगन कहँ सोइ ॥ ठग बिचार उत्पात अति याके पीछे होइ १५९ चौ० । ठगन कियो बहुभांति बिचारा । कर पद काटि कुआं में डारा ॥ भगवत इच्छा इकनृप आयो । तिनहिं देखि तत्क्षण निकरा-यो १६० हाथ पावँ देखो नहिं जबहीं । तिनते पूंछत भो नृपतब-हीं॥तब जयदेव कहत इमि भयऊ । माता गर्भ जन्म इमिलयऊ १६१ राजा निज मन माहिं बिचारी । अहै प्रतापी कोऊभारी॥ भगवद्भक्त भाग्य ममभारी । दर्शनदैकै कियो सुखारी १६२ अ-पनी राजधानि को लायो । हाथ जोरि यह बिनय सुनायो ॥ कुछ सेवाहित आयसु दीजै । कहो साधु सेवा नृप कीजै १६३ राजासो करि अंगीकारा । सेवा साधु करत सुखसारा ॥ सुनि ठगसाधु रूप बनाई । राजा भवन पहूंचे आई १६४ लखि जय-देव नृपहि समुझाई । ये सबहैं हमार बड़भाई ॥ महापुरुष इन को गुनिलीजै । बिबिध भांति सेवा नृप कीजै १६५ राजासुनि वैसाही कीन्हा । ठगन जानि जयदेवहि लीन्हा ॥ ताते त्रास युक्त अति डरहीं । बिदाहेतु बिनती नित करहीं १६६ तब इक दिन बहु द्रव्य दिवाई । तिनको बिदा दियो करवाई ॥ पठये सेवक घर पहुँचावन । ते तिनते बोले बचपावन १६७ किमि सम्बन्ध स्वामि अरु तुमते । वाणी सत्य कहौ सो हमते ॥ जो ऐसे मर्य्याद समेता । भई बिदाई आनँद देता १६८ कह ठग कहन योग नहिं एहा । तब दिय सेवक बचन सनेहा ॥ काहू